www.thearyasamaj.org

।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का प्रबल उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2011-13
दयानन्दाब्द १८९,
शक सं. १९३४,
सृष्टि सं.- १९६०८५३११३

वर्ष-12 अंक-15 मार्गशीर्ष कृ. १३ से मार्गशीर्ष शु. १३ सं. २०७० वि. 01 से 15 दिसम्बर 2013 अमरोहा, उ.प्र. पृ. 12 प्रति-5/-

आर्यसमाज के शिष्ट मंडल ने की लोकायुक्त से भेंट

अर्जुन देव चड्ढा
कोटा (राजस्थान)।

आर्यसमाज जिला सभा कोटा के एक शिष्ट मण्डल ने जिला प्रधान अर्जुन देव चड्ढा की अगुवाई में राजस्थान के लोकायुक्त एस. एस. कोठारी से सर्किट हाउस में शिष्टाचार भेंट की।

आर्यसमाज के शिष्ट मण्डल में कैलाश बाहेती, हरिदत्त शर्मा, डॉ. के.एल. दिवाकर, डी.ए.वी. स्कूल की प्राचार्या सरिता रंजन गौतम, धर्म शिक्षक शोभाराम आर्य, जे.एस. दुबे, रामकृष्ण बल्दुआ, रामदेव शर्मा, प्रभू सिंह कुशवाह, ओमदत्त गुप्ता, अजय सूद, रामप्रसाद याज्ञिक आदि मौजूद थे।

अर्जुन देव चड्ढा ने श्री कोटारी को कोटा संभाग में आर्य समाज में आर्यसमाज द्वारा किये जा रहे कार्यों की जानकारी दी। इस अवसर पर श्री कोठारी ने कहा कि आप लोग इसी प्रकार समाज सेवा के कार्य करते रहें।

सर्किट हाउस में पहुंचे आर्य समाज के शिष्ट मण्डल के सदस्यों ने गायत्री मंत्र लिखित केसरिया दुपट्टे धारण किये हुए थे। श्री कोठारी का स्वागत केसरिया दुपट्टा पहनाकर सामूहिक मंत्रोच्चार के साथ किया। सरिता रंजन गौतम ने फूलों का गुलदस्ता भेंट कर श्री कोठारी का स्वागत किया।

राजस्थान के लोकायुक्त एस.एस. कोठारी के साथ जिलासभा कोटा के पदाधिकारीगण- केसरी।

गांधीधाम में वैदिक समारोह १३ से

वाचोनिधि आचार्य
गांधीधाम (गुजरात)

आर्यसमाज, गांधीधाम द्वारा दिव्य वैदिक सत्संग समारोह 13 से 15 दिसम्बर को वैदिक संस्कार केन्द्र, इफ्को कॉलोनी के सामने, वार्ड-10 बी/सी, गांधीधाम में धूमधाम से मनाया जायेगा। समारोह में कमलेश कुमार अग्निहोत्री, अहमदाबाद, आचार्या नन्दिता शास्त्री, वाराणसी, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, हरियाणा व पंडित सत्यानन्द देववागीश, गांधीधाम आदि पधारेंगे।

यह जानकारी देते हुए पुरुषोत्तम पटेल, प्रधान, वाचोनिधि आचार्य, महामंत्री व गुरुदत्त शर्मा, कोषाध्यक्ष ने श्रद्धालु नर-नारियों व बच्चों से भारी संख्या में पधारकर समारोह को सफल बनाने की अपील की है।

टंकारा चलो

टंकारा (राजकोट)। महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्मभूमि टंकारा में 25 से 27 फरवरी तक ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य में भव्य समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर देश विदेश से पधारे आर्य विद्वान, सन्यासी, नेता व श्रद्धालु आर्यजन भारी संख्या में भाग लेंगे। आर्य उपप्रतिनिधि सभा अमरोहा द्वारा भी इस अवसर पर गत वर्षों की भांति यात्रा का कार्यक्रम बनाया गया है। इसकी विस्तृत सूचना आर्यावर्त केसरी के पृष्ठ संख्या-8 पर प्रकाशित की गयी है।

आर्यावर्त केसरी द्वारा नव संवत्सर एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर

वर्षगांठ स्मारिका

इस विशेषांक हेतु रचनाएं, शुभकामनाएं व विज्ञापन सादर आमंत्रित हैं। अपनी प्रतियां अभी से बुक कराएं।

दिल्ली में आर्य महासम्मेलन २४ से

नई दिल्ली (डॉ. अनिल आर्य)। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 24 से 26 जनवरी 2014 तक रामलीला मैदान, पी.यू. ब्लॉक, पीतमपुरा में 251 कुण्डीय विराट यज्ञ एवं अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। यह जानकारी परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष व मुख्य संयोजक डॉ. अनिल आर्य ने दी। आयोजक मण्डल ने श्रद्धालु जनता से परिजनों व ईष्टमित्रों सहित भारी संख्या में महासम्मेलन में पधारने की अपील की है।

ऋषि प्रणाली का निःशुल्क शिक्षा केन्द्र

गुरुकुल आर्यनगर (हिसार) हरियाणा

आवश्यकता है

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से मान्यताप्राप्त इस गुरुकुल में एक प्रशिक्षित विज्ञान अध्यापक की आवश्यकता है। सेवामुक्त अध्यापक को प्राथमिकता। वेतन योग्यता एवं अनुभव के आधार पर।

-रामस्वरूप शास्त्री (मुख्याधिष्ठाता)

मोबा. : 09466403222, 09466613413

गुरुकुल की ऋतिका व उपासना जे.आर.एफ. में चयनित

नजीबाबाद। ऋतिका व उपासना यू.जी.सी. विश्व विद्यालय अनुदान आयोग की कनिष्ठ शोधवृत्ति (जे.आर.एफ.) में चयनित हुई। इस समाचार से गुरुकुल में हर्ष की लहर दौड़ गयी, सभी ने इनको बधाई दी।

परमात्मा हमारा माता-पिता

महाशय नगली (मुजफ्फर नगर)। ब्रह्मचारी कृष्णदत्त की प्रेरणा से यज्ञ कराने वाले इस ग्राम में सामूहिक यजुर्वेद परायण यज्ञ 11 से 13 नवम्बर तक गुरुवचन शास्त्री बरनावा के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। जिसमें यजमान गुड्डू प्रधान थे। इस अवसर पर वेद विद्वान आचार्य गुरुवचन ने ब्रह्मचारी कृष्ण देवदत्त जी के प्रवचनों के आधार पर कहा कि परमात्मा हमारा माता-पिता कहलाता है। इसीलिए प्रत्येक मानव के अन्तर्हृदय में एक पिपासा रहती है कि मैं अपने ज्ञान और विज्ञान में रत्त हो जाऊं और सृष्टि को निहारता रहूं। हमारे यहां प्रत्येक वेद मंत्र उस महान देव की महिमा का गुणगान गाता रहता है और प्रत्येक प्राणी के हृदय में उसकी पिपासा जागरूक रहती है क्योंकि ज्ञान कदापि भी वृद्धपन को प्राप्त नहीं होता, ज्ञान सदैव मानो एक रस बना रहता है। जो एक रस रहने वाला हो, न तो उसे वृद्धपन आता है और न उसे शिशुपन आता है, वह सदैव नवीन बना रहता है।

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास

आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित हैं

न्यास प्रतिवर्ष महात्मा आर्यभिक्षु (स्वामी आत्मबोध सरस्वती) के दीक्षा दिवस (जन्म दिवस) पर आर्य विद्वानों को सम्मानित करता है। इस वर्ष भी 31 जनवरी 2014 को सम्मानित किये जाने वाले वैदिक विद्वानों एवं कार्यकर्ताओं के चयन हेतु हिन्दी में निम्न प्रकार प्रस्ताव आमंत्रित हैं-

1. स्वामी धर्मानन्द विद्यामार्तण्ड आर्यभिक्षु पुरस्कार (आर्य विद्वान के लिए)
2. ब्र. अखिलानन्द आर्यभिक्षु पुरस्कार (नैष्ठिक ब्रह्मचारी के लिए)
3. स्वामी आत्मबोध सरस्वती कर्मवीर पुरस्कार (श्रेष्ठ आर्य कार्यकर्ता के लिए)

प्रथम व द्वितीय पुरस्कार सामान्यः उन विद्वानों, ब्रह्मचारियों को प्रदान किये जाते हैं जिनकी कोई निश्चित आय नहीं होती। तृतीय पुरस्कार के लिए ऐसी कोई शर्त नहीं हैं। प्रत्येक पुरस्कार राशि रुपये 11,000/- (ग्यारह हजार मात्र) हैं।

उपर्युक्त पुरस्कारों के लिए 31 दिसम्बर 2013 तक प्रस्ताव (आवेदन) प्रधान अथवा मंत्री, न्यास के नाम से, सम्पूर्ण विवरण-शैक्षिक योग्यता, लेखन, प्रचार कार्य, जनहित में योगदान, दो फोटो आदि के साथ अपने दूरभाष (चल) एवं पूर्ण पते सहित भेजने का कष्ट करें।

देवराज आर्य, मंत्री (09997070789)

www.thearyasamaj.org

ग्राम स्वाहेड़ी में यज्ञ करते आर्यजनों का सुन्दर दृश्य- केसरी।

यज्ञशाला तो कल्प तरू है : आचार्य-अरविन्द

सुमन कुमार 'वैदिक'
नजीबाबाद (बिजनौर)

आर्य परिवार ग्राम स्वाहेड़ी में अथर्वेद परायण यज्ञ आचार्य अरविन्द शास्त्री (लाक्षागृह बरनावा) के ब्रह्मत्व मे जितेन्द्र कुमार उर्फ बिल्लू के सुपुत्र पृथ्वीराज के पंचम वर्षगांठ पर 10 से 14 नवम्बर तक सम्पन्न हुआ। आचार्य सहित कुमार एवं अंकुर द्वारा सुन्दर वेद पाठ किया गया। यज्ञ के पश्चात् आचार्य अरविन्द शास्त्री ने कहा कि मन एक साथ एक ही कार्य करता है, यज्ञशाला देवसदन है। सीमा पर सजग पहरेदार योगी से कम नहीं। यज्ञ का एक अंग संगतिकरण भी है। उन्होंने कहा कि संसार एक कल्पवृक्ष है यहां जो विचार करोगे पूर्ण होगा। यज्ञशाला भी एक कल्प तरू है जो हमारे विचारों को बढ़ाता है। किन्तु जैसी विचार धारा होगी वैसी ही बढ़ेगी। रावण और राम दोनों याज्ञिक थे किन्तु रावण ने दुषित विचारों से यज्ञ किया। आर्य वही है जो सच्ची बात करता है इसलिए यज्ञ की वेदी पर सत्संग की चर्चा हो। वेद मन्त्र पाठ से सुनने की शक्ति बढ़ती है जितना वायुमण्डल पवित्र होगा उतने शब्द भी पवित्र होंगे। आर्यजगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक नरेश दत्त ने कहा केवल मानने से काम चलने वाला नहीं। सत्य को हृदय में धारण करना होगा। पहले कपड़े गन्दे, किन्तु मन साफ था इसलिए पुण्य अधिक पाप कम था। उन्होंने भजनों के माध्यम से ज्ञानवर्षा की। इस अवसर पर पुखराज सिंह शिवम्, विनीत कुमार, प्रिन्स कुमार, सचिन कुमार आदि अनेक लोगो ने उपस्थित होकर आहुतियां दीं। जगराज सिंह ने बताया कि यह ग्राम जो झगड़ों और लूट में प्रसिद्ध था ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त जी के प्रेरणा से पूरा ग्राम याज्ञिक विचार धारा में जा आर्य परिवारों का ग्राम हो गया है।

मानव को अंधकार से निकालना है ज्ञानी का कर्तव्य : पं० रामचन्द्र

सतीश आर्य
नजीबाबाद (बिजनौर)

आर्य कन्या गुरुकुल नजीबाबाद में आचार्य रामचन्द्र (सोनीपत) ने अथर्व वेद के मन्त्र, सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय सच्चा सच्च वचसी परस्पृधाते की व्याख्या करते हुए कहा कि जब कोई मनुष्य सुविज्ञान को जानने की इच्छा करता है तो उसके मार्ग में सत् और असत् दोनों आपस में प्रतिस्पर्धा करते हैं।

संसार में सब कुछ सत्य है जो ऋजु, सरल, कुटिलता रहित है, सज्जन उसकी रक्षा करते हैं तथा असत्य को पूरी तरह मार डालते हैं। संसार का सारा ज्ञान विज्ञान भूमि से आया है। मन इन्द्रियों का ज्ञान विज्ञान में नहीं पराविज्ञान में है। ज्ञानी का कर्तव्य हो जाता है कि मानव मात्र को अन्धकार से निकाले काशी में महर्षि दयानन्द को रघुनाथ कोतवाल न बचाते तो पाखण्डी मूर्ति पूजक उन्हें मार देते, किन्तु इसके पश्चात् भी कहते हैं कि तुच्छ मल–मूत्र के शरीर की रक्षा के लिए सत्य का प्रचार कैसे छोड़ू। डॉ० प्रियंवदा वेद भारती ने महर्षि दयानन्द द्वारा बताए आठ गप्प और आठ सत्य की व्याख्या की।

ब्रह्मचारिणियों ने *'प्रभु को विसार' किसकी आराधना करूं एवं वेदों से यह सार ऋषियों ने निकाला है। /मनुष्य तन एक सुन्दर यज्ञ शाला है।* इस अवसर पर कनाडा से पधारे प्राण सेठ मुख्य अतिथि थे। गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने सुन्दर वेद मन्त्रों, भजनो एवं भाषण की प्रस्तुति की।

अनादि और नित्य हैं ईश्वर, जीव व प्रकृति

पं. महेन्द्र कुमार आर्य

शास्त्रों में कहा गया है कि ईश्वर, जीव और प्रकृति, ये तीन पदार्थ अनादि और नित्य हैं। ईश्वर इस सृष्टि का कर्ता–धर्ता–संहकर्ता और कर्मफल प्राप्त कराने वाला है। प्रकृति जीव के लिए सृष्टि के रूप में होती है। इस प्रकार यह सृष्टिचक्र आदिकाल से चल रहा है।

जीवात्मा प्राणियों के शरीर में विद्यमान रहकर उसका संचालन करता है। जब तक जीवात्मा शरीर में विद्यमान उसका संचालन करता है। तब तक वह जीवित कहलाता है और जब शरीर को त्याग देता है तो मृत्यु कहलाती है। वर्तमान विज्ञान अभी तक इतना समर्थ नहीं हो पाया है कि वह किसी यन्त्र द्वारा सूक्ष्मातिसूक्ष्म जीव को देख सके। दर्शनशास्त्र में जीवात्मा की पहचान निम्नलिखित लक्षणों से बतायी गयी है। इच्छाद्वेषप्रयत्न सुखदुःखज्ञानान्यात्मनो लिग्डम्।– न्यायदर्शन प्रियत्ल अर्थात्– इच्छा– पदार्थो की प्राप्ति की अभिलाषा, द्वेष–दुःख आदि की अनिच्छा, प्रलय–पुरुषार्थ, सुख–आनन्द, दुःख–अप्रसन्नता ज्ञान–विवेक, ये आत्मा की पहचान कराने वाले छह लक्षण हैं। अर्थात् ये जहां होते हैं वहां आत्मा की प्रीति होती है।

जीवात्मा नित्य और अविनाशी है। यह कभी नहीं मरता। जीवात्मा इस संसार में अच्छे बुरे कर्मो के अनुसार सुख–दुःख को प्राप्त करता है। जीवात्मा कर्म करने में स्वतन्त्र है किन्तु फल भोगने में ईश्वरीय व्यवस्था के अधीन है। कर्मफल कभी नष्ट नहीं होता। उसे भोगना ही पड़ता है। बुरे कर्मो से उसे कीट–पतंगे, पशु–पक्षी आदि की योनि प्राप्त होती है। अच्छे कर्मो से मनुष्य का जन्म प्राप्त होता है।

जीवात्मा का चरम लक्ष्य है– मोक्ष प्राप्ति। मोक्ष मनुष्य जीवन में ही सम्भव है, अन्य किसी योनि में नहीं। जीवात्मा श्रेष्ठकर्म, ज्ञानप्राप्ति और ईश्वर दर्शन से मोक्ष पाने का अधिकारी बनता है, ईश्वर के दर्शन उसे ज्ञान और योगसाधना द्वारा अपने स्वरूप में ही होते हैं। तब उसके सारे बन्धन, अज्ञान–अविधा, दुःख कर्मसंस्कार आदि मिट जाते हैं और वह परमात्मा की शरण में रहकर आनन्द का उपयोग करता है। जीवात्मा अनेक सृष्टिकाल तक मुक्ति में रहता है। मुक्तिकाल का उपभोग कर जीवात्मा फिर संसार में जन्म धारण करता है। इस प्रकार अनादि–अनन्त काल तक वह सृष्टिचक्र चलता रहता है।

प्रधान, आर्यसमाज,
सूरजपुर, ग्रेटर नोएडा

यज्ञ के ब्रह्मा, उपदेश, प्रवचन आदि के लिये सम्पर्क करें।
कार्यक्रम, यज्ञ आदि में भी बुलायें।
आचार्य पवनवीर
गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, शुक्रताल, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)
सम्पर्क सूत्र : 09639661532

ऐसे होते हैं आर्य

समाजसेवा को समर्पित अमरनाथ

नजीबाबाद (बिजनौर) सुमन कुमार 'वैदिक'। सुमहिन्दु मंच सोनीपत के मंत्री अमरनाथ, समाज सेवा में सबसे आगे रहते हैं। प्रत्येक माह के तीसरे बुद्ध को आई कैम्प लगाकर रोकियों को दिल्ली सेन्ट हॉस्पिटल ले जाते तथा आँखों का अपरेशन करा कर वापस उनके घर छोड़ते व निशुल्क दवाईयां, चश्में उपलब्ध कराते हैं। अब तक 155 ऐसे आई0 कैम्प हिन्दुमंच के तत्वाधान में लगा चुके हैं। इसके साथ पीलियां के हजारों रोगियों को ठीक कर चुके हैं। सैकड़ों गरीब कन्याओं के विवाह कराये हैं। आर्य विचार धारा के प्रचार हेतु ब्रह्म स्त्रोत पत्रक पन्द्रह हजार छापकर बांट चुके हैं। सौ से अधिक लोगों को संध्या अर्थ सहित कण्ठस्थ करा चुके हैं। सदैव छः या आठ पृष्ठों का सुन्दर फोल्डर जिसमें आर्य समाज के नियम, गायत्री मंत्र अर्थ सहित स्वस्थ रहने के साधन इत्यादि उपयोगी बाते लिखी होती हैं। मिलने पर परिचित को भेट देते हैं। हिन्दु मंच के द्वारा वैदिक सत्सग कराते हैं। अमरनाथ जी प्रत्येक आर्य के लिए प्रेरणा स्त्रोत हो सकते हैं।

प्रत्येक शुभ कार्य यज्ञ : गुरूवचन शास्त्री

शिव कुमार शास्त्री
नगला कबूल (मेरठ)

नगला कबूल (गढ़रोड) मेरठ में ऋग्वेद परायण यज्ञ का आयोजन 13 से 17 नवम्बर तक आचार्य गुरूवचन शास्त्री (बरनावा) के ब्रह्मत्व में किया गया। वेद पाठ गुरूकुल बरनावा के ब्रह्मचारियों सुमित, सौरभ ने किया। इस अवसर पर वेद परायण यज्ञ के विशेषज्ञ आचार्य गुरूवचन ने ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त के प्रवचनों के आधार पर कहा कि यज्ञ महान कष्टों से होता है, प्रत्येक शुभ कर्म यज्ञ कहलाता है। परमात्मा का चिन्तन करने वाला भी यज्ञ कर रहा है, परोपकारी भी सुन्दर याज्ञिक है, अतिथि सेवा भी यज्ञ कहलाता है।

प्रजा के सुख और राष्ट्रहित में किया कार्य भी यज्ञ होता है। ब्रह्म, अध्वर्यु होता और यजमान का निर्वाचन कर अग्नि में सुन्दर आहुतियां प्रदान किया जाने वाला भी यज्ञ से सुख शान्ति के नवीन अंकुर उत्पन्न होते हैं देवताओं का पूजन कर अपने जीवन को तपस्वी बनाते हैं जिससे इस लोक और परलोक दोनों में सुख मिलता है।

शिव कुमार शास्त्री ने बताया कि 1980 से ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी ने पहलीबार यहां यज्ञ किया था तब से निरन्तर ग्रामवासी परायणयज्ञ करते हैं। किशोरी लाल ने यज्ञ परम्परा यहां प्रारम्भ की।

धूमधाम से मनाया आर्ष कन्या गुरूकुल महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव

सुमन कुमार 'वैदिक'
नजीबाबाद

नजीबाबाद के प्रतिष्ठित आर्ष कन्या गुरूकुल महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव का प्रारम्भ 8 नवम्बर को गुरूकुल परिसर की यज्ञशाला में सामवेद परायण यज्ञ के साथ हुआ। जिसमें समरपाल सिंह एवं गंगा देवी मुख्य यजमान व अशोक आर्य किरतपुर, देश बन्धु आर्य एवं एम. देव डुडेजा, प्रकाश डुडेजा यजमान रहे। गुरूकुल की आचार्या डॉ0 प्रियंवद। वेद भारती के ब्रह्मत्व में यज्ञ की पूर्णाहुति 10 नवम्बर को हुई।

गुरूकुल की ब्रह्मचारिणियों ने वेदपाठ तथा सुन्दर भजनों की प्रस्तुति की। इस अवसर पर वेद विदुषी आचार्या ने वेदमंत्रों की व्याख्या का प्रारम्भ सामवेद के प्रथम मन्त्र से करते हुए कहा कि अग्नि ईश्वर के प्रमुख नाम के रूप में ऋग्वेद में भी प्रयुक्त हुआ है। अग्नि, अग्रणर्भवति अर्थात् मार्गदर्शक को भी कहते हैं। सृष्टि के प्रारम्भ में प्रभात बेला में जब मानव ने आँख खोली तो उसके उपयोग में आने वाली सारी सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थी। आवश्यकता थी केवल मार्ग दर्शक की।

परमात्मा ने जब उसके हृदय में वेद के अपने ज्ञान का प्रस्फुटन किया तब वह बोल उठा 'अग्नि आयाहि' हे ईश्वर, मेरा मार्गदर्शन कीजिए ताकि मैं आपकी बनायी हुई सृष्टि से समुचित लाभ उठा सकूं। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार मृग भागता है, उसी प्रकार जीवन में लक्ष्य प्राप्ति तक हमें शान्त नहीं बैठना है। जैसा दृष्टिकोण बनाओगे वैसा ही अन्तःकरण बनेगा। यदि चाहते हो कि मन में उत्तम विचार जगें तो अपना दृष्टिकोण भी उत्तम बनाओं।

सोनीपत से पधारे आचार्य रामचन्द्र आर्य ने कहा कि सब कहते है। कि वह ईश्वर से प्रेम करते हैं जब कि सच्चाई यह है कि हम ईश्वर से न के बराबार प्रीति करते हैं। जिसको उन्होंने उदाहरण प्रस्तुत कर सिद्ध किया। अन्तिम दिन मुख्य समारोह में मुख्य अतिथि उपजिलाधिकार नजीबाबाद तथा विशिष्ट अतिथि प्राणसेठ (कनाडा) के सम्मुख गुरूकुल की छात्राओं ने भज,

सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करतीं गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियां- केसरी।

नाटक, भाषण, ताइक्वाण्डों आदि की आकर्षक प्रस्तुति की। कठोपनिषदपद पर आधारित नाटक नचिकेता के साथ पूर्ण पुरूष का सम्पूर्ण चरित्र, जिसमें विश्व के अनेक महापुरूषों से महर्षि दयानन्द की तुलना की गई थी। को सबने पसन्द किया। मुख्य अतिथि आशुतोष अग्निहोत्री ने कहा कि गुरूकुल के बच्चों में प्रारम्भ से ही आत्मविश्वास भरा हुआ दिखाई दिया। गुरूकुल कांगड़ी के पूर्व उपकुलपति आचार्य वेद प्रकाश ने कहा कि हमारा राष्ट्र तभी मजबूत बनेगा जब राष्ट्र के नागरिकों के शरीर, मन मजबूत होगें तथा उनमें आत्मिक बल होगा।

गुरूकुल शिक्षा पद्धति की गुणवत्ता पर प्रश्न चिन्ह लगाने वाले देख लें अब आई0ए0एस0 जहां निकल रहे हैं वहीं जे0आर0एफ0 जैसे स्थानों में भी इनका चयन हो रहा है। संस्कृत जगत के प्रख्यात डॉ0 प्रशस्य मित्र ने संस्कृत में हास्य व्यंग सुनाकर राष्ट्र की समस्याओं का वर्णन किया तथा काव्य पाठ संस्कृत में किया। संचालन कु0 *कल्पना तथा मनीषा शास्त्री* ने किया। विशिष्ट अतिथि प्राणसेठ तथा वेद प्रकाश जी ने गुरूकुल के नवनिर्मित भोजनालय का वेद पाठ के मध्य उद्घाटन किया। आचार्य रामचन्द्र ने गुरूकुल की वार्षिक पत्रिका का विमोचन किया।

नारियां हैं गृहस्थ की पगड़ी : डॉ. प्रियम्वदा

दिव्या आर्या
फरीदपुर (बरेली)

ग्राम तराखारत तहसील फरीदपुर में सामुहिक यजुर्वेद परायण महायज्ञ 12 से 15 अक्टूबर तक सम्पन्न हुआ जिसके माध्यम से ग्रामीण अंचल में वैदिक प्रचार के माध्यम से रूढीवाद और कुरूतियों तथा गुरूडम वाद से फैल रहे अज्ञान, अन्धकार को निकालने का प्रयास किया गया।

वेद पाठ आर्षकन्या गुरूकुल नजीबाबाद की बरेली जिले की ब्रह्मचारिणियों ने किया तथा यज्ञ की ब्रह्मा इसी गुरूकुल की विदुषी आचार्या डॉ0 प्रियंवदा वेद भारती ने "आदित्ये रात्नासीन्द्राव्या उष्णीष पूषायं धर्माय रीठव।" यजुर्वेद के इस मन्त्र की व्याख्या करते हुए कहा कि नारियाँ ही गृहस्थ की पगड़ी, पृथ्वी की बागडोर तथा भूमि के समान पोषक है। जहां पर नारियों का अपमान होता हे वहां कभी स्वर्ग नहीं हो सकता। सन्तान का निर्माण माता अपने गर्भ में ही कर सकती है। माता मदालसा ने गर्भ में ही शिक्षा और शुद्ध आहार–व्यवहार से ऋषि पुत्रों को जन्म दिया।

माता कौशल्या ने भी मर्यादा पुरूषोत्तम राम का निर्माण गर्भ में संस्कार और शुद्ध आहार द्वारा किया किन्तु उस महान आत्मा पर शम्भू वद्य और सीता त्याग का दोष लगाया जाता है। अहिंसा के अन्दर ब्रहा का स्वरूप स्वतः रहता है। ब्र. सूर्या ने नारी शक्तिकरण के ऊपर विचार रखते हुए कहा कि शंकराचार्य, तुलसीदास, कबीर, ईसाई तथा मुस्लिम सभी ने स्त्रियों को सम्मान नहीं दिया जिसे स्वामी दयानन्द ने वेद का प्रमाण देकर स्त्रियों को सम्मान दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

ब्रह्मचारिणी शिवानी ने देश की समस्याओं और उनके समाधान के उपाय बताये। दिव्या ने राष्ट्र नेतृत्व की स्थिति, वन्दना ने भ्रूण हत्या की मानकता से अवगत कराया। प्रणव मिश्र (बदायूं) ने एवं पं0 प्रेम पियूष ने अपने वक्तव्यों से जनता को सम्बोधित किया तथा गुरूकुल की ब्रह्मचारियों ने सुभधुर भजनों की प्रस्तुति की।

युवा चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

आचार्य रणजीत 'विवित्सु'
आमसेना (ओड़िशा)

वेद मंत्रों के उद्घोष के साथ विजयादशमी के शुभावसर पर विजयपर्व के रूप में गुरूकुल आश्रम आमसेना में 11अक्टूबर को शिविर का शुभारम्भ माननीय विधायक नुआपड़ा राज भाई धोलकिया के करकमलों से उद्घाटन कर हुआ। प्रातः काल ओड़िशा, छत्तीसगढ़ के नवयुवकों/छात्रों का भीड़ गुरूकुल परिसर में अत्यन्त दर्शनीय थी। इस शुभावसर पर जिला शिशु सुरक्षा अधिकारी बलदेव रथ भी उपस्थित थे। पूज्यपाद स्वामी धर्मानन्द ने आगंतुक नौजवानों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए अपना उद्‌बोधन दिया। गुरूकुल आश्रम के तत्वावधान में आर्यवीर दल ओड़िशा की ओर से लगभग 200 छात्रों को शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक उन्नति के गुर सिखाये गये।

इस अवसर पर अनेक नवयुवकों ने यह भी संकल्प लिया कि हम ऋषि दयानन्द के द्वारा बताये गये मार्ग का अनुसरण करते हुए अपने परिवार को भी इस मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करेंगे। कार्यक्रम में छ.ग. आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष अवनिभूषण पुरंग, रवि आर्य, बसन्त *(प्रधान, आर्यसमाज कोहका)*, बसन्त पण्डा (पूर्व विधायक), प्रसन्न पाढ़ी (जिला अध्यक्ष बीजेडी), अशोक शास्त्री (बरगढ़ कालेज), हरिबन्धु आर्यन्, भुलऊराम (पूर्व शिक्षक), ईश्वरचन्द्र पटेल (कोमना), आनन्द कुमार शास्त्री (मंत्री आर्य वीर दल ओड़िशा), ब्र. शंकरदेव, रणजीत 'विवित्सु', विश्वामित्र मुमुक्षु, डॉ0 के.सी.साहू, कैलाश मरोदिया आदि आर्य वीरों को मार्मिक उद्‌बोधन देकर उन्हें अच्छे मार्ग पर चलने के लिए प्रोत्साहित किया। इस शिविर के समस्त कार्यक्रमों का संचालन उत्कल प्रान्तीय आर्य वीर दल के संचालक डॉ0 कुन्जदेव मनीषी ने किया।

ऋषि बोधोत्सव 24 से

शकुन्तला सुखीजा
करनाल।

आर्य केन्द्रीय सभा, करनाल द्वारा आयोजित युगद्रष्टा महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव 24 से 27 फरवरी 2014 तक करनाल मानव सेवा संघ (कर्णपार्क) निकट बस स्टैण्ड में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा। सभा प्रधान सत्येन्द्र मोहन कुमार ने जानकारी देते हुये बताया कि बोधोत्सव में वैदिक वक्ता स्वामी धर्मबन्धु गुजरात व भजनोपदेशक भानु प्रकाश आय, उ0प्र0 सुमधुर भजनों से ऋषि लीला का गुणगान करेंगे। यज्ञ की ब्रह्मा आचार्या डॉ0 प्रियम्वदा वेदभारती व वेदपाठ आर्ष कन्या गुरूकुल नजीबाबाद (उ0प्र0) की विदुषी ब्रह्मचारिणियां करेंगी। आर्य केन्द्रीय सभा करनाल ने महोत्सव में अधिकाधिक संख्या में पधारने की आर्यजनों से अपील की है।

आर्य समाज मन्दिर, नेमदारगंज

सत्यदेव प्रसाद आर्य 'मरुत'
नेमदारगंज, नवादा (बिहार)।

आर्य समाज द्वारा अपने पुरखों की परम्परा को जीवित रखते हुये आगामी 21 से 24 नवम्बर तक भव्य सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन, सह राष्ट्र रक्षा महायज्ञ का आयोजन किया गया। इसी सन्दर्भ में सत्यार्थ प्रकाश के प्रचारार्थ युवा एवं विद्यार्थी वर्ग को प्रेरित करने हेतु परीक्षा का आयोजन भी किया गया। इस अवसर पर प्रोत्साहन हेतु **प्रथम पुरस्कार**–सात हजार रूपये, **द्वितीय पुरस्कार**–पांच हजार रूपये तथा **तृतीय पुरस्कार**–पांच सौ रूपये के पुरस्कारों की व्यवस्था की गयी।

चतुर्वेद परायण यज्ञ सम्पन्न
यज्ञ संसार का श्रेष्ठतम् कर्म : विजयपाल

योगेश कुमार
झालू (बिजनौर)

झालू में चतुर्वेद परायण यज्ञ के मुख्य आयोजक ज्ञानेश्वर जी ने बताया कि स्वाहेडी में होने वाले परायण यज्ञों से प्रेरणा लेकर सन् 2000 से यही यज्ञ कराने प्रारम्भ किये। 2007 से चतुर्वेद परायण यज्ञ सभी ग्रामीण मिलकर करते हैं। जिसमें किसी प्रकार का चन्दा एकत्र नहीं करते, यज्ञ में जो आर्थिक सहयोग देते हैं, उसी से यह यज्ञ प्रतिवर्ष कराया जाता है।

झालू में 4 से 10 नवम्बर तक सामूहिक चतुर्वेद परायण यज्ञ का भव्य आयोजन योगाचार्य अरविन्द शास्त्री वरनावा के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। पाँच विशाल वेदियों पर चारों वेदों के मन्त्रों से एक साथ यज्ञ के इस आयोजन में समस्त जन सहयोग रहा। अथर्ववेद की यज्ञ वेदी से अरविन्द शास्त्री ने कहा कि भौतिक विज्ञान के साथ आध्यात्मिक विज्ञान को भी जानें, हमें मन, वचन, कर्म से ऊँचा बनने की उत्सुकता होनी चाहिए। मन की प्रक्रिया आहार से होती है। हमारा अन्त बहुत पवित्र हो। मन पवित्र होने पर बुद्धि पवित्र बन जाती है। आचार्य विजयपाल शास्त्री ने कहा कि यज्ञ संसार का श्रेष्ठतम् कर्म है। प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में इसे अपनाना चाहिए। आचार्य अमित सिंह वेदालंकार ने कहा कि सांख्य और योग दर्शन द्वारा मानव उन्नति की ओर अग्रसर हो सकता है। ब्रह्मचारी अंकुर भारद्वाज ने वेदपाठ और भजनों से मन्त्रमुग्ध किया।

आचार्य कपिल ने छान्दोग्योपनिषद् के अनुसार धर्म की व्याख्या की। स्वामी ब्रह्ममुनि (शाहपुर) ने एकादशीव्रत का स्वरूप एकादश इन्द्रियों का शुद्धिकरण बताया। आचार्य रामचन्द्र (सोनीपत) ने श्रद्धा की व्याख्या करते हुए कहा कि सत्य को धारण करना ही श्रद्धा है। सुमनकुमार वैदिक ने ब्रह्मचारी कृष्णदत्त के प्रवचनों के विषय में जानकारी दी कि हमारे साहित्य में मिलावट की गयी है, जिससे हमारे रामायण, महाभारत आदि के पात्रों का स्वरूप और चरित्र भ्रष्ट कर दिया गया है, उसका सही स्वरूप की ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त जी के साहित्य से जानकारी होती है। मुख्य यज्ञमान लवलेश कुमार, संजीव सिंह, सत्यपाल सिंह, ब्रजेश सिंह, चन्द्रमोहन कोठीवाल एवं डॉ0 कामेन्द्र सिंह आदि उपस्थित रहे।

हर्षोल्लास के साथ मनाया वार्षिकोत्सव

रामगोपाल आर्य
बांगरमऊ

आर्य समाज बांगरमऊ के 42वें वार्षिकोत्सव पर जे0पी0 पैलेस (गेस्ट हाऊस) संण्डीला रोड बागरमऊ में 21 से 25 अक्टूबर तक विश्व कल्याणार्थ महायज्ञ पर चतुर्वेद शतकम् के मन्त्रों से आहुतियां दी गयीं। इस अवसर पर प्रथम दिवस प्रभात फेरी तथा 23 अक्टूबर को शराब हटाओ देश बचाओ महारेली का आयोजन किया गया जिसमें आठ विद्यालयों के बच्चों के साथ भारी संख्या में आम जन भी सम्मिलित हुए तथा महामहिम राष्ट्रपति को परगनाधिकारी के माध्यम से ज्ञापन दिया गया। इस अवसर पर चोटीपुरा गुरूकुल की कन्याओं द्वारा यज्ञ तथा भजनों की प्रस्तुति की।

इस अवसर पर पं0 महेन्द्रपाल, पं0 भगन आर्य, पं0 धर्मदेव चतुर्वेदी (क्रान्तिकारी) अंजली आर्य ने भजनों एवं उपदेशों के माध्यम से राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं, भारतीय संस्कृति, धर्म की रक्षा कैसे हो, के साथ आओ लौट चले वेदों की ओर के संदेश के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

कमला स्नातिका को आर्य जगत की भावभीनी श्रद्धांजली

सासनी। कन्या गुरूकुल सासनी की मुख्य अधिष्ठात्री 'कमला' स्नातिका की स्मृति में गुरूकुल परिसर में 15 अक्टूबर को प्रातः 10 बजे से शान्ति यज्ञ डॉ0 बुद्धदेव विद्यालंकार आचार्य एवं जीवन सिंह आर्य उपाचार्य, साधु आश्रम अलीगढ़ के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। यज्ञ के पश्चात् ओ३म आर्य की अध्यक्षता में श्रद्धान्जली सभा में उद्योगपति डॉ0 बालकृष्ण गुप्त, फिरोजाबाद, डॉ0 देवनारायण भारद्वाज, मेजर यतीन्द्र प्रताप, डॉ0 हेमा जी, डॉ0 तेजपाल तेवतीया, देवेन्द्रपाल वर्मा (प्रधान उ0प्र0 आर्य प्रतिनिधि सभा) डॉ0 धीरेन्द्र सिंह, डॉ0 महेश विद्यालंकार, पं0 पंकज आर्य, स्वामी चेतनदेव, विमल कुमार एडवोकेट, आदि ने श्रद्धांजली देते हुए अपने संस्मरण सुनाये। इस अवसर पर 15 विभिन्न सभाओं के सौ से अधिक व्यक्तिगत शोक प्रस्ताव प्राप्त हुए। श्रद्धांजली सभा का संचालन डॉ0 पवित्रा वेदालंकार सासनी द्वारा किया गया। ज्ञातव्य है कि कमला स्नातिका का निधनगत 7 अक्टूबर को लम्बी बिमारीके पश्चात् हो गया था।

आर्य वन रोजड़ के संस्थापक एवं युवकों के प्रेरणा स्रोत धनजी भाई वेलाणी

"स जातो येन जातेन जाति वंशः समुन्नतिम्। परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।।

अर्थात् इस परिवर्तनशील संसार में उसी मनुष्य का जन्म लेना सार्थक है जिसके जन्म लेने से देश, जाति और समाज का अभ्युदय होता है। कुल पवित्र होता है, जननी कृतार्थ होती है, और वसुन्धरा पुण्यवती कहलाती है। धन्य है वे महापुरूष जो अपने समुज्ज्वल व्यक्तित्व एवं अलौकिक कृतित्व के दिव्यालोक से दिग्भ्रान्त संसार को आलोकित करते करते हैं। यह ध्रुव सत्य है कि प्रत्येक महापुरुष अपने प्रतिभा सम्पन्न निखरित व्यक्तित्व से युग को प्रभावित करता है। वह अपने *प्रदिप्त कार्यों से लोक– कल्याण* का सन्मार्ग विस्तृत करता है ऐसे ही नररत्न महापुरूषों में दिव्य पुरुष स्वर्गीय दिवंगत धन जी बाल जी भाई वेलाणी थे।

आप एक सामान्य बेलानी परिवार में गुजरात के छोटे से कोंडारा गांव में वि.सम्वत 1876 में जन्मे, शिक्षा भी अधिक नहीं ले पाये, लेकिन धन्य है माता 'केसरबेन' और पिता वालजी भाई जिन्होंने 'मातृमान् पितृमान आचार्यवान पुरुषों वेद' के अनुसार अपने प्रिय बालक धनजी में उत्तम संस्कार देकर उत्तम कार्य करने की प्रेरणा दी, जिससे आज भी धनजी भाई वैदिक समाज में सर्वोच्च शिखरों पर विराजमान होकर सूर्य की भांति चमक रहे हैं। आपके चार पुत्र हैं– सर्व प्रभुलाल बेलानी, मन्सुख भाई बेलानी, हिम्मत भाई बेलानी और

विनोद भाई बेलानी चारों सुपुत्र राम–लक्ष्मण की भांति परस्पर सौहार्द पूर्वक परस्पर मिलकर अपने पूज्य माता–पिता के अधूरे कार्यों को अपने लिये नहीं, अपितु वैदिक धर्म के विस्तार के लिये ही अवतरित हुए हों, ऐसा हमें लग रहा है। आपके किये कार्यों से समस्त आर्यजगत परिचित है जैसे– आर्यवन विकास ट्रस्ट, गौशाला, योग महाविद्यालय, बालक बालिकाओं की पाठशाला, आर्यसमाज घाटकोपर मुम्बई जैसी महत्तवपूर्ण संस्थाओं की स्थापना में आपने जो पुरूषार्थ किया है। वह प्रशंसनीय है, आपकी सरलता सादा जीवन, उच्च विचार, कम बोलना और रचनात्मक कार्य ज्यादा करना आपके जीवन का लक्ष्य था। आपने अपने सामाजिक कार्यो से समाज को प्रभावित किया था, और विद्वत्त उपदेशकों ने सदैव ही आपका साथ दिया।

स्व0 धनजी भाई वेलानी के जीवन में ऐसे अनेक गुण थे जिससे आर्य पुरुष, विद्वान, उपदेशक, उनके जीवन से सदैव ही प्रेरणा लेते रहे हैं। आपके गुणानुवाद के साथ–साथ यदि आपकी सहधर्मिणी (धर्मपत्नी) स्वर्गीय हीरालेन जी के विषय में कुछ भी न लिखा जाय, तो यह मेरा नैतिक अपराध होगा, किसी महान व्यक्ति के जीवन में सफलता प्राप्त करने तथा सामाजिक व धार्मिक कार्यों के करने में उनकी धर्म पत्नीयों को भी बहुत कष्ट उठाने पड़ते हैं और उसके सहयोग से ही वह जीवन के भिन्न– भिन्न क्षेत्रों में सफलतायें प्राप्त करता है। उसी आधार को लेकर धनजी भाई बेलानी को पूर्ण सहयोग स्व0 हीराबेन जीवन के हर क्षेत्र में देती रहीं। इसके अतिरिक्त–सन्तानों का पालन पोषण, संवर्धन, गृह कार्यों की कुशलता, सम्पन्नता आदि गुण उनमें विद्यमान होते हैं। जो एक कुशल नारी में होने चाहिये। ऐसे धन्य महापुरूष युग प्रवर्त्तक यशस्वी व्यक्तित्व एवं अमर कृतित्व सम्पन्न दिवंगत स्व0 ध नजी भाई बेलानी को श्रद्धासुमन अर्पित हैं।

'हे ईश्वर! तूने अच्छी लीला की, तेरी इच्छा पूरी हो''

**प्रस्तुति : पं. जगदीश चन्द्र 'वसु'
77, वेद भवन, देसराज कॉलोनी, पानीपत**

अष्टांग योग की सिद्धि के लिए अष्टकोणिय यज्ञशाला : विक्रम वैद्य

सुमन कुमार 'वैदिक'
नजीबाबाद (बिजनौर)

वैदिक मोहन आश्रम में चतुर्वेद **परायण यज्ञ के साथ अष्टकोणिय यज्ञ शाला में योग के अष्टांग** योग की सिद्धि एवं कामना पूर्ति हेतु अथर्ववेद के विशेष मंत्रों से आचार्य वैद्य विक्रम देवशास्त्री (बरनावा) द्वारा कराया गया।

यज्ञ के पश्चात् वैद्य जी ने इस यज्ञ के वैज्ञानिक कर्मकाण्ड की विवेचना करते हुए कहा कि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के प्रवचनों में अनेकों प्रकार के यज्ञ एवं उनके कर्मकाण्ड का विवरण मिलता है जिसके अनुसार 15 प्रकार के यज्ञ एवं 84 प्रकार की यज्ञशालाओं में किये जाते थे। विभिन्न यज्ञ के अलग देवता होते हैं।

आचार्य वैद्य जी ने बताया कि बरनावा में हौलेण्ड निवासी **माता चन्द्रकली सिंह के सहयोग से इस प्रकार के यज्ञों के लिए** विशेष यज्ञशाला बनायी गयी है जिसमें चैत्र मास में देवी यज्ञ सप्तकोणिय यज्ञशाला में किया जाता है। अग्नि की सप्तजिव्हा है जिसके आधार पर ही सप्तकोणिम यज्ञ शाला बनायी जाती है। प्रकृति की पूजा की जाती है। प्रकृति को देवी, धेनु, रेणुका, काली, दुर्गा, वैष्णवी कहा जाता है। देवी यज्ञ का देवता गायत्री है। देवी वह जो हमें देती है।

बालिका शिक्षा में ही परिवार की तरक्की

भारतीय समाज में नारी को अनेक दृष्टियों से सम्मानजनक स्थान दिया गया है फिर भी भारतीय नारी की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो रही है। पुरुषों ने नारियों को उनके अधिकारों से वंचित रखा तथा उन पर तरह-तरह से अत्याचार किये। आधुनिक युग में नारी अपने अधिकारों के प्रति जागरुक हो गयी है। नारियों को शिक्षा देकर उनके भविष्य को सुधारा जा सकता है। शिक्षित नारी ही परिवार को सूझ-बूझ से ठीक तरह चला सकती है और अपनी सन्तान को शिक्षा दे सकती है।

भारतीय समाज में नारी को देवी माना गया है और यहां तक कहा गया है- 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' अर्थात् जहां नारी की पूजा होती है वहीं देवताओं का वास होता है। प्राचीन काल में नारी का स्थान बहुत ही सम्मानीय था। प्राचीन काल से प्रचलित भारतीय नामों, जैसे-सीता-राम, राधे-श्याम आदि से यह स्पष्ट होता है कि नारी का स्थान पुरुष से श्रेष्ठ है, इसलिये वह पुरुष से पहले आती है। यह सर्वविदित है कि भारतीय नारी शक्ति रूप में पूजनीय रही, रतिरूप में नहीं। नारी ने यह स्थान अपनी विद्वता, योग्यता, चरित्र-उच्चता, हृदय की उदारता एवं निष्कपटता तथा अपने परिश्रम से ही प्राप्त किया है। आज की नारी अपने-अपने अधिकारों के प्रति जागरुक है। अनेक त्रासदियां, दुख, तनाव, अत्याचार सहने के बाद आज नारी की स्थिति में परिवर्तन हुआ है। उसे अनेक अधिकार और अवसर प्राप्त हुए हैं। आज की नारी प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ रही है। किरण बेदी, बिछेन्द्रीपाल अपना उच्च स्थान प्राप्त कर चुकी हैं। किरण बेदी, कल्पना चावला आदि ने यह साबित कर दिया है कि नारी पुरुष से किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। नारी गृह-स्वामिनी है तो वह सरस्वती भी व सरस्वती की उपासिका भी। प्राचीन भारतीय विद्वान नारी को पुरुष के समकक्ष एवं उसका पूरक समझते थे, तभी उन्होंने यह विधान बना रखा था कि बिना नारी के यज्ञ सम्पन्न नहीं हो सकता था। पुरुष पत्नी के साथ ही यज्ञ कर सकता था। राम द्वारा अश्वमेध यज्ञ करते समय सीता की स्वर्ण प्रतिमा को निर्मित करना इसी बात का प्रतीक है।

निश्चय ही नारी वह शक्ति है जिसके बिना संसार अधूरा है। एक सफल परिवार, सफल समाज, सफल देश के लिये नारी का शिक्षित होना अति आवश्यक है। परिवार की समाज की, संस्कृति की आधारशिला नारी है। आज नारी प्रत्येक क्षेत्र में कार्य कर रही है, परन्तु दुर्भाग्यवश आज भी अनेक ऐसे उदाहरण मिल जाते हैं- जहां पुत्री की शिक्षा पर जोर न देकर पुत्र की शिक्षा का ध्यान रखा जाता है। कहा जाता है कि पुत्री को पराये घर जाना है, उसकी उच्च शिक्षा से क्या लाभ, पुत्र को ही उच्च शिक्षा देनी चाहिये। यह विचारधारा एकदम गलत है, पुत्री को पुत्र की अपेक्षा अधिक शिक्षा की आवश्यकता है, क्योंकि उसे दूसरे घर जाकर दूसरे परिवार के साथ तालमेल बनाना है, सबको अपना बनाकर सबकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अपने अस्तित्व को भी बनाये रखना है।

संगठनकर्ता महात्मा नारायण स्वामी

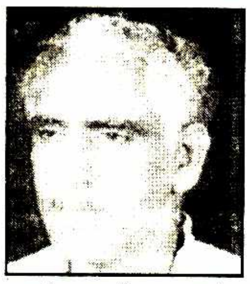

डॉ० अशोक आर्य

उत्तर प्रदेश के जिला जौनपुर का गांव सिंगारपुर धन्य है, जहां के एक सरकारी कर्मचारी सूर्य प्रसाद के यहां बसंत पंचमी 1926 वि0 के दिन एक महान संगठनकर्ता, आर्यसमाज के आधिकारिक लेखक तथा अभूतपूर्व विद्वान ने जन्म लिया, जिसका नाम नारायण प्रसाद रखा गया। यही नारायण प्रसाद बाद में चलकर महात्मा नारायण स्वामी के नाम से जाना गया। इस बालक ने हाथरस तथा अलीगढ़ से शिक्षा आरम्भ की। यहीं पर महर्षि के दर्शन भी किये, किंतु जीवन भर इस बात का दुख रहा कि अध्यापक के बहकावे में आकर स्वामी जी का उपदेश न सुन सके। विवाह के साथ ही पिताजी नहीं रहे। शीघ्र ही मुरादाबाद में नौकरी मिली, तथा यहीं पर आर्य हुए। यहां पर खूब स्वाध्याय भी किया। आप आर्यसमाज की सेवा करना चाहते थे। परिवार आड़े आ रहा था। अकस्मात पहले पत्नी तथा फिर अल्पायु में दोनों पुत्रों की मृत्यु ने आपका मार्ग सुगम कर दिया। अत: एकाग्रचित्त हो आर्यसमाज के कार्यों में समय देने लगे। आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्यालय मुरादाबाद आने से सभा का कार्य करने लगे। सभा के पत्र महर्रिक, तो बाद में हिन्दी आर्यमित्र के नाम से चला, का सम्पादन करने लगे। अभी तक आपका नाम बचपन वाला अर्थात नारायण प्रसाद ही था। सरकार तो आपको ऊंचे से ऊंचा पद आपकी मेहनत व ईमानदारी के कारण देना चाहती थी, किंतु आर्यसमाज के प्रति अनुराग ने ऐसा न होने दिया, तथा पेंशन की भी चिन्ता किये बिना पेंशन से कुछ समय पूर्व ही पद त्याग कर आर्यसमाज की सेवा में एकाग्र होकर जुट गये। गुरुकुल वृन्दावन के पहले आचार्य, और फिर मुख्याधिष्ठाता बने। आपके प्रयास से झोंपड़ी स्वरूप यह गुरुकुल उस समय की अग्रणी संस्था बन गया।

जब 1919 में पचास वर्ष की आयु हुई, तो वानप्रस्थ लेते हुए नैनीताल के रामगढ़ में नारायण आश्रम बनाकर तप व आर्यसमाज की सेवा करने लगे। कुछ समय बाद ही संन्यास की दीक्षा लेकर नाम नारायण स्वामी रख लिया।

1908 में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना हुई। आपकी लगन व मेहनती प्रवृत्ति को देखते हुए 1910 में ही आपको इस सभा का मंत्री बना दिया गया। आपने इस पद पर रहते हुए अपनी संगठन कुशलता, विद्वता तथा जो प्रचार कार्य किया, उसकी सफलता इसी बात से स्पष्ट होती है कि 1923 में आप सभा प्रधान बने तथा इस पद पर दस वर्ष तक रहे। इस सभा के प्रधान पद से हटते ही मथुरा में महर्षि जन्म की अर्द्धशताब्दी मनाने का निर्णय हुआ। इसके आप कार्यकारी संयोजक बनाए गये। इस आयोजन में आपकी कुशाग्र बुद्धि के साथ ही संगठन व प्रबन्ध पटुता के भी दर्शन होते हैं। निवास, भोजन व कार्यक्रम स्थल की व्यवस्था, जो तीन लाख से अधिक लोगों के लिए था, आपकी कुशलता का ही परिणाम था। जब अजमेर में निर्वाण अर्द्धशताब्दी हुई, तो यहां भी आपका प्रताप ही दिखाई दिया।

1939 में हैदराबाद में आर्यों ने सत्याग्रह की घोषणा कर दी, तो मौत के मुंह में जाने के लिए पहला जत्था लेकर आप ही ने हैदराबाद जाकर गिरफ्तारी दी, तथा विजयी होकर लौटे। इसी प्रकार सिन्ध के मुस्लिम शासक ने सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाया, तो आपके नेतृत्व में अनेक आर्य सत्यार्थ प्रकाश हाथों में लहराते हुए वहां जा पहुंचे। सिन्ध सरकार कोई कार्यवाही करने का साहस न जुटा पाई तथा आर्यों ने सफलता पाई।

ये सब व्यवस्थाएं करते हुए भी बीच-बीच में समय निकाल कर अनेक उच्च कोटि की पुस्तकें भी लिखीं। आप एक अच्छे योगी भी थे। जब 1931 में बरेली में दूसरा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन हुआ, तो अपने अध्यक्षीय भाषण में आपने सांगठनिक दृष्टि से अत्यंत मार्मिक व प्रेरक विचार दिये। (आज के पदलोलुप नेताओं को इन विचारों से सीख लेनी चाहिए।) यह सम्मेलन 1931 को सम्पन्न हुआ, तथा इसी स्थान अर्थात् बरेली में ही 15 अक्टूबर 1947 को इनका निधन हो गया।

-१०४, शिप्रा अपार्टमेंट,
कौशाम्बी, गाजियाबाद
०९७१८५२८०६८

स्वतंत्रता संग्राम के अमर नायक वीर सावरकर

मोहनलाल मगो

2 जुलाई 1911 को चारखानों वाली खुरदरी गंजी, घुटन्ना, और टोपी, हथकड़ियों, बेड़ियों के आभूषण, हाथ में ताम्रचीनी का लोटा और तश्तरी, संगीनधारी सिपाहियों से घिरा, दुबली-पतली, परन्तु फौलादी कंचन काया वाला, आजादी का यह दूल्हा पोर्ट ब्लेयर के बन्दरगाह पर अपने महाराजा पोत से उतर कर अन्डमान की नारकीय कारागार की ओर बढ़ा, तो मानों सारा द्वीप-पुंज प्रकंपित हो उठा। चलने से पूर्व विनायक ने चारों ओर एक विहंगम सा दृष्टिपात किया और हठात् उनके मुख से एक ऋषिवाणी मुखरित हुई- ''आहा, कितना रमणीक टापू है, पर है पराधीन। क्या कभी ऐसा होगा कि भारतमुक्ति के बाद हमारी नौसेना का एक बेड़ा यहां स्थापित हो। इससे हमारा पूर्वी द्वार सर्वथा सुदृढ़ और सुरक्षित रहेगा, और भविष्य में कोई विदेशी शत्रु इधर से आक्रमण करने का दुस्साहस नहीं कर पाएगा। ''यस्य जलं तस्य बलं''। क्योंकि जिसके पास जल है, उसी के पास बल है।

बात आई-गई हो गयी, पर किसे पता था कि श्रापित ऋषि की यह देववाणी कभी भविष्यवाणी सिद्ध होगी। लगभग 15 मिनट तक बेड़ियों, हथकड़ियों की खड़ताल पर चलते-चलते सावरकर उस भीमकाय और भयाव दुर्ग रूपी कारागार के प्रवेश द्वार पर पहुंचे। चूं... चर्र... के कर्कश स्वर के साथ उसके लौ कपाट खुले और पहला ही टकराव हुआ वहां के खूंखार आयरिश जेलर बारी से, जो स्वयं को वहां का 'बादशाह' और 'खुदा' कहता था।

पहला संवाद- ओ हो तो आप हैं मि0 सावरकर, जिसने मार्सेलिस के तट पर जहाज से भागने की कोशिश की थी?

जी हाँ।

बताओ तुमने ऐसा क्यों किया?

बताओ, डरो नहीं, मैं अंग्रेज नहीं, आयरिश हूं।

स्वयं को गुलामी से आजाद करने के लिए। दासता से बड़ा अभिशाप और क्या है? हां, आपके आयरिश होने न होने से मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं अंग्रेजों की कई बातों का समर्थक और प्रशसंक हूं। मैंने लन्दन में जीवन का महत्वपूर्ण समय बिताया है। आश्चर्य इस बात पर हो रहा है कि आप आयरिश होकर मुझसे यह प्रश्न पूछ रहे हैं। आयरलैण्ड में आपका 'सिनफिल' आन्दोलन भी तो अंग्रेजों से मुक्त होने के लिए कब से संघर्ष कर रहा है। सावरकर के इतिहास ज्ञान और सटीक उत्तर से बारी हक्का-बक्का रह गया। ''ओह! मैं तो भूल ही गया था कि आप बैरिस्टर भी हैं.. भला आपसे बहस कौन कर सकता है? पर एक बात याद रखना कि यहां से भागने की कोशिश मत करना। यहां चारों ओर समुद्र ही समुद्र है, और उसमें हजारों आदमखोर मछलियां पता नहीं, कब तुम्हें निवाला बना लें। ''बारी बाबू, शायद आपको मालूम नहीं है कि मार्सेलिस में भी मैं समुद्र में ही कूदा था और वहां भी सभी प्रकार की मछलियां थीं, पर मैं सागर तट पर पहुंच ही गया था। खैर, वह सब जाने दीजिए।''

जाने तुम्हें कौन देगा, बैरिस्टर! तुम छोटे-मोटे समय के लिए नहीं, पूरे पचास सालों तक हमारे मेहमान रहोगे। वैसे भी यहां आने वाला मुश्किल से ही सही-सलामत लौट पाता है। कुछ पागल हो जाते हैं, और कुछ आत्महत्या कर लेते हैं। पता नहीं, तुम क्या करने वाले हो?

''सुन लो बारी, उनमें से किसी की नौबत नहीं आएगी। मेरे पचास वर्ष पूर्ण होने से बहुत पहले ही तुम सभी साम्राज्यवादी अपना-अपना बोरिया-बिस्तर लपेट कर हमारे देश से भाग जाओगे, और यहां हमारी आजादी का झण्डा लहराया जाएगा। तो ऐसे थे हमारे पूर्वज आजादी के दीवाने।

पी-६५, पाण्डव नगर
दिल्ली-११००९१

विशेष परिशिष्टों की श्रृंखला में प्रकाशित विशेषांक- भाग-२ (गतांक से आगे)

आर्यजगत के कवि

आर्यावर्त केसरी की योजना है कि समय-समय पर विभिन्न विषयों पर केन्द्रित विविध विशेषांक प्रकाशित किये जाएं। इससे पूर्व इसी श्रृंखला के अन्तर्गत 'आर्यजगत के पत्र-पत्रिकाएं व पत्रकार' विशेषांक का तीन भागों में प्रकाशन किया गया जिसे सम्पूर्ण आर्यजगत में विशेष रूप से सराहा गया। हिन्दी काव्य साधना के क्षेत्र में भी आर्यसमाज का विशेष योगदान है। अतः इसी विषय पर केन्द्रित 'आर्यजगत के कवि' विशेषांक का प्रकाशन प्रारम्भ किया जा रहा है। आर्यजगत के विद्वानों, कवियों, साहित्य साधकों, रचनाकारों, जिज्ञासु पाठकों व शोधार्थियों से अनुरोध है कि वे इस पर अपनी रचनात्मक प्रतिक्रियाओं से अवश्य ही अवगत कराएं, ताकि इस विशेषांक तथा भविष्य में प्रकाशित होने वाले विशेषांकों को और भी अधिक प्रभावी बनाया जा सके।

इस विशेषांक में हमने आर्यावर्त केसरी में समय-समय पर प्रकाशित होने वाले कवियों को समाहित करने का प्रयास किया है। विद्वान पाठकों व रचनाकारों से अनुरोध है कि वे आर्यजगत के विभिन्न कवियों के विषय में परिचयात्मक सामग्री भेजेंगे, ताकि इस विशेषांक को समग्रता प्रदान की जा सके। यह सामग्री वर्तमान व दिवंगत रचनाकारों पर केन्द्रित हो सकती है। आपके सतत् सहयोग व मूल्यवान सुझावों से हमारा पथ प्रशस्त होगा, व इस विशेषांक को बहु आयामी बनाने में सफलता प्राप्त होगी, ऐसी आशा है। धन्यवाद! -सम्पादक

शिव अवतार रस्तोगी 'सरस'

सम्भल (उ0प्र0) में 4 जनवरी 1939 को जन्मे शिव अवतार रस्तोगी 'सरस' की माता का नाम श्रीमती द्रोपदी देवी एवं पिता का नाम श्री रतनलाल (कविरत्न) है। आप शिक्षण कार्य से अवकाश प्राप्त हैं। आपकी प्रकाशित कृतियों पंकज पराग, कवि और लेखक, अभिनव मधुशाला, सरस संवादिकाएं आदि के अलावा कई कृतियां अप्रकाशित हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन के साथ ही पं0 सुमित्रानन्द पंत पुरस्कार, हरिश्चन्द्र पुरस्कार, जैमिनी अकादमी आदि से भी आप सम्मानित होते रहे हैं। आपका पता है-
मालती नगर (डिप्टी गंज) मुरादाबाद (उ०प्र०),
फोन- 0591- 2429152, 9456032671

पर्यावरण की पुकार

'स्वप्न' में देखा रोहन ने पर्यावरण
रोते-रोते सिसकते था यह कह रहा-
घुट रहा मेरा दम, हाय हर दम यहां
इस प्रदूषण को अब तक बहुत ही है सहा।।
धूल धुंए से जल-वायु दूषित हुए
ऑक्सीजन की मात्रा भी है घट रही।
फ्रिज और एसी के कारण अब आकाश में
पर्त ओजोन की है सतत फट रही।।
हाल यह ही रहा इस प्रदूषण का गर-
ऑक्सीजन कहां तक मैं दे पाऊंगा?
बढ़ रहा इस कदर यह प्रदूषण यहां-
एक दिन मैं स्वयं भी तो मर जाऊंगा।।
स्वप्न में ही सुनी थी यह चेतावनी
आंख रोहन की भय से तुरत खुल गयी।
सोचने वह लगा हाय! होगा अब क्या?
पैर के नीचे धरती स्वयं हिल गयी।।

श्रीमती कनक लता 'सरस'

माता पूरनदेवी तथा पिता बाल मुकुन्द रस्तोगी के घर में 2 जनवरी 1942 को श्रीमती कनक लता 'सरस' का जन्म स्याना (बुलन्दशहर) में हुआ।आप एक गृहणी हैं। महिला आर्यसमाज की सदस्या, तथा राष्ट्र सेविका समिति, अ0भा0 अम्बेडकर अकादमी, मद्रास एवं महाराजा हरिश्चन्द्र महिला समिति द्वारा सम्मानित हुई हैं। आपने भजन, गीत एवं कविताओं का सृजन किया। आपकी रचनाओं का विभिन्न पत्र/पत्रिकाओं में प्रकाशन हो चुका है। आपका पता है- मालती नगर (डिप्टीगंज), मुरादाबाद, फोन- 9412141152

दहेज दानव

अब दहेज दानव यहां, मचा रहा है शोर।
जीवित लक्ष्मी रो रही, घर-घर चारों ओर।।
बना रहा वर-मूल्य है, सबको रिश्वतखोर।
काली 'लक्ष्मी' खींचती, वर को अपनी ओर।।
काले धन्धे को विवश, कन्या के पितु-मात।
इस देहज के ही निमित्त, रहता है उत्पात।।
इच्छा, आशा सब मिटी, अद्भुत है यह खेल।
बिन दहेज करनी पड़ी अब शादी बेमेल।।
सस्ते दूल्हे हैं नहीं, टूटी मन की आस।
घूम-घाम कर थक गये, बापू हुए उदास।।
बढ़ता है वर मूल्य जब चिन्ता चढ़ती जाय।
दूल्हा मांगे रोकड़ा, मिलता नहीं उपाय।।
पढ़ लिख कर छैला बने, चढ़ भाव उस पार।
देखो घर-घर हो रहा, दूल्हों का व्यापार।।
कीमत अब वर-मूल्य की बढ़ती पद अनुसार।
जे.ई., शिक्षक, डॉक्टर, सब का लगा बजार।।

हरिश्चन्द्र आर्य

काली पगड़ी, अमरोहा निवासी 88 वर्षीय श्री हरिश्चन्द्र आर्य, आर्यसमाज के प्रति समर्पित तथा वैदिक कर्मकाण्ड में पारांगत व्यक्तित्व हैं तथा आपने क्षेत्रभर में आर्यसमाज का नाद गुंजित किया है। आप संगठन कला में प्रवीण हैं। इस अवस्था में भी आपमें युवाओं जैसा जोश है। आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार हेतु आप निरन्तर नई-नई योजनाएं बनाते तथा क्रियान्वित करते रहते हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के आप कई वर्षों तक प्रचार अधिष्ठाता रहे हैं तथा पिछले 15 वर्षों से आर्य उपप्रतिनिधि सभा, अमरोहा के प्रचार अधिष्ठाता हैं। आपने अब तक काव्य साधना के क्षेत्र में सैंकड़ों कविता, मुक्तक आदि लिखे हैं।
आपका पता है- प्रचार कार्यालय, काली पगड़ी, अमरोहा (उ.प्र.) फोन- ०५९२२-२६३४१२

महर्षि दयानन्द सरस्वती

दयानन्द हिन्दुओं के ही नहीं, जग के हितैषी थे
वेद विद्या में निपुण निष्काम योगी और मनीषी थे
कोई ऐसा निडर और ब्रह्मचारी युग प्रवर्तक
दयानन्द सा नहीं पैदा हुआ इस काल में अब तक
अछूत अनाथ और विधवाओं के कराहने में
वे जीवन होम कर बैठे इन्हें ऊंचा उठाने में
अनेकों वर्ष तक करते रहे संघर्ष जीवन से
मठाधीशों असक्षम पंडितों और दुर्जनों से
दयानन्द का ऋणी है बच्चा-बच्चा लोकवाणी में
दयानन्द का चुका दो ऋण जवानों तुम जवानी में
तिलक, आजाद, बिस्मिल, स्वामी श्रद्धानन्द और गांधी
इन सभी को था दिखाया राहे आजादी राहे आजादी

आर्यावर्त केसरी की वर्षगांठ स्मारिका
हेतु रचनाएं, शुभकामनाएं व विज्ञापन सादर आमंत्रित हैं। अपनी प्रतियां अभी से बुक कराएं।
-सम्पादक

डॉ० राजकिशोर सक्सेना 'राज'

डॉ. राज सक्सेना (डॉ. राजकिशोर सक्सेना) का जन्म 9 जून 1945 को उत्तर प्रदेश के रामपुर की तहसील स्वार के खेमपुर ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम श्री किशोरीलाल सक्सेना तथा माता का नाम श्रीमती तारावती था। श्री सक्सेना नगर निगम, देहरादून के सहायक नगर आयुक्त पद से सेवानिवृत्त हैं। आपकी बाल कविताओं की छः पुस्तकें हैं। साथ ही विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में भी आपकी गजलें, कविताएं आलेख प्रकाशित हो चुके हैं। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग तथा नेपाली साहित्य संगम सहित चालीस से भी अधिक सम्मान आपको प्राप्त हो चुके हैं। आपका पता है- **धनवर्षा, हनुमान मन्दिर, खटीमा (उ०ख०)- २६२३०८ मोबा. : 09410718777**

क्रान्ति-उद्घोष

लेखनी में अग्नि भर कर, लिख अनल कविता नवल।
देश ने तुझको पुकारा, युद्ध को कवि-वर निकल।
ये शिखण्डी कब न जाने,
भेंट कर दें देश को।
पीढ़ियां रह जाएं तकती,
शून्य से अवशेष को।
लौह सम दीवार में ढल, हो खड़ा आगे अटल।
देश ने तुझको पुकारा, युद्ध को कवि-वर निकल।

नवसंवत् का स्वागत है

संस्कार, संस्कृति, शिक्षा-संग, शील समर्पण का स्वागत है
वेद ज्ञान पर आधारित नव, संज्ञान समर्पण का स्वागत है
प्रकट इसी दिन आर्यजगत का
सामाजिक प्रतिरूप हुआ
तन, मन, धन से दयानन्द के
श्रेष्ठ वचन का स्वागत है।
हित चिन्तक हिन्दी, हिन्दू के नवसंवत्सर का स्वागत है
भारत भूमि में शान्ति सुरक्षा, सुख समृद्धि का स्वागत है।

आर्यजगत के कवि (भाग-२)

वीरेन्द्र कुमार राजपूत

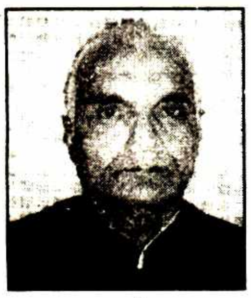

ग्राम- झुझैला, जनपद- बिजनौर में 20 नवम्बर 1939 को माता- मीनावती व पिता उमराव सिंह शेखावत के यहां जन्मे वीरेन्द्र कुमार राजपूत राजकीय इं0 कालेज, मुरादाबाद से सेवानिवृत्त हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं विशेष रूप से आर्य पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएं प्रकाशित होती रहती हैं। आप दर्जन भर सम्मानों से विभूषित हैं। आपका पता है- **सौरभ सदन, ८- वसन्त कुंज, ३६९/१, वसन्त विहार, फेज-१, देहरादून, फोन- ९४१२६३५६९३**

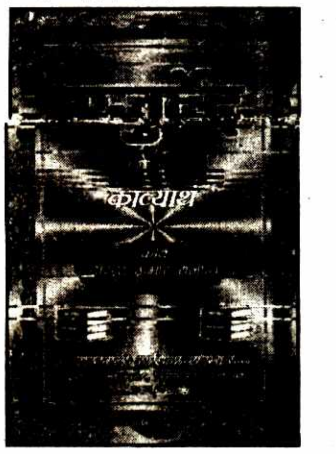

भगवान का निवास

होते ही प्रभात निज घोंसलों में जाग कर,
किसकी बताओ पक्षी रोज चर्चा करें;
किसकी छुअन से हुलास अंग-अंग भरे,
धरती का अंग-अंग रोज पुलका करे।
किसकी सुखानुभूति फैल कुंज डाल-डाल,
ताल-ताल मंजु कंज कलियां खिला करें;
सबका है प्यारा, सुख-दाता, वो सहारा बड़ा,
कह 'राजपूत' नित सबका भला करें।।

पढ़ता कुरान रहा, वेद औ पुरान रहा,
सोच कुछ बीच में बखान मिल जाएगा;
संतन का साथ किया, चिंतन भी डाट किया,
सोच इस भांति ही अंधेर तिर जाएगा।
मस्जिद के बीच कभी मन्दिर के बीच,
कभी गिरजे के बीच गया, सोच दिख जाएगा;
कहै 'राजपूत' रहा ढूंढ दूर-दूर ज्ञात-
न थी करतूत मन बीच छिप जाएगा।।

चाहते उसे हो देखना, तो देख लीजै आप,
नित्य अलि-माल और फूल लगी डाल में;
कुंजरों की चाल में, कुलाच में मृगों की, तथा-
बत्तखों से और बगुलों से भरे ताल में।
लीजिए निहार निर्झरों में, नदियों में, नद,
पवन, सरों में, सागरों के बिछे जाल में;
सूरज में, चन्द्रमा में, तारकों, ग्रहों में, तथा-
कहै 'राजपूत' इस रचना विशाल में।।

खेत में किसान, कारखाने बीच मजदूर,
करते रहे जो काम दिन और रात हैं;
होटलों में प्लेट कप धोते सड़कों पे हाथ-
गाड़ियां चलाते लोग, शाप सह जात हैं।
नित्य ही उदास, बिन आस, नैन नीर भरे,
गाल चिपके हैं, अस्थि-पंजर लखात हैं;
ऐसे ही गरीब, दीन और दलितों के बीच,
कहै 'राजपूत' भगवान का निवास है।।

डॉ० गौरी शंकर श्रीवास्तव 'पथिक'

डॉ. गौरीशंकर श्रीवास्तव 'पथिक' का जन्म 1 जुलाई 1939 को इलाहाबाद में पिता हरीप्रसाद श्रीवास्तव एवं माता श्रीमती रामप्यारी देवी के घर में हुआ। 30 जुलाई 1997 को भारतीय खाद्यनिगम के सहायक प्रबन्धक के पद से सेवानिवृत्त श्री पथिक जी की 25 कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं। आपने 4 खण्डकाव्य, लघु कथा संग्रह आदि का संकलन किया, तथा आठ पत्रिकाओं का सम्पादन किया है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में 100 से अधिक. कहानियां, लघुकथाएं एवं 1000 से अधिक गीत प्रकाशित हैं। आपको विभिन्न संस्थाओं द्वारा तीन दर्जन से अधिक सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। आपका पता है- **पथिक कुटीर, जवाहरनगर, सतना (म०प्र०) फोन- ९८२७६२५९१६**

नया विधान चाहिए

मनुष्य के विकास को नया विधान चाहिए।
स्वतंत्र हो उड़ान, खुला आसमान चाहिए।।
पंख फड़फड़ाएगा जो पिंजड़े में बन्द है।
गीत बन न पाएगा जो अतुकान्त छन्द है।
कथ्य-शिल्प-लय का मोहक वितान चाहिए।।
मनुष्य के विकास को नया विधान चाहिए।।
प्रेम का पुजारी सदा वासना से दूर है।
महत्व जाने वह क्या जो बहशी मगरूर है।
निष्काम कृष्ण-राधा का भाव प्राण चाहिए।।
मनुष्य के विकास को नया विधान चाहिए।।
नई लालसा, नवीनता की जिसमें चाह है।
किंतु पुरातन के लिए उर में दबी आह है।
पूर्व संस्कृति के लिए सम्मान चाहिए।।
मनुष्य के विकास को नया विधान चाहिए।।
भूत की आधारशिला हम सहेज कर रखें।
वर्तमान को भविष्य के लिए मुखर रखें।
हर जीव के लिए दयालु इंसान चाहिए।।
मनुष्य के विकास को नया विधान चाहिए।।

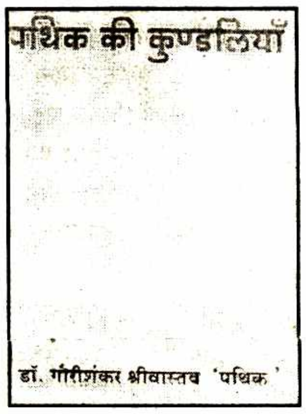

जगन्नाथ 'विश्व'

30 अक्टूबर 1937 को ग्राम हरूखेड़ी, तराना, जिला उज्जैन (म0प्र0) में जन्मे जगन्नाथ 'विश्व' हिन्दी, अंग्रेजी, के अतिरिक्त लोकभाषा, मालवी, राजस्थानी एवं अन्य विविध आंचलिक बोलियों में भी अपना दखल रखते हैं। गीत, नवगीत, ओज, हास्य, व्यंग्य के लेखक को मंच-संचालन व पत्रकारिता का भी अनुभव रहा है। आपकी कई कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके साथ ही आपने भारत ज्योति, वातायन, ग्रेसिम संदेश आदि का संपादन के साथ ही टी0वी0 कार्यक्रम में अभिनय भी किया है, तथा आकाशवाणी व दूरदर्शन से आपके कार्यक्रम प्रसारित हो चुके हैं। आपको कई संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। आपका पता है- **मनोबल, २५, एम०आई०जी०, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, हनुमान नगर, नागदा जं० (म०प्र०), मोबा०- ०९४२५९८६३८६**

नाच उठी धरती

बजा रही बूंदों की झांझ प्रिय बदरिया।
नाच उठी धरती लोग, मना रहे खुशियां।।

खनक उठी चूंड़ियां घुंघरू हुए बावरे,
खेतों में थिरक रहे राधा संग सांवरे,
चांदी सी बिखर रही मोती की लड़ियां।
नाच उठी धरती लोग, मना रहे खुशियां।।

मदमाती सरिता ज्यूं चली मिलन-सैंयां,
बांध रही प्रीत का बन्धन पुरवैया,
प्यार भरे दिन की फिर घिर आई सुधयां।
नाच उठी धरती लोग, मना रहे खुशियां।।

धरती तन-मन श्रृंगारती आज अंगड़ाई,
हिंडौलों में ज्वार उठा मचली तरुणाई,
जगी मेहनत की आस लिए बांकी उमरियां।
नाच उठी धरती लोग, मना रहे खुशियां।।

हरिकुमार साहू

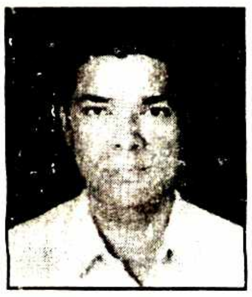

28 अप्रैल 1953 को बिलासपुर (छत्तीसगढ़) में पिता रामलाल साहू एवं माता सुन्दर देवी के घर में उत्पन्न हरिकुमार साहू बर्तनों के व्यवसायी हैं। आपने लगभग 200 वैदिक गीत लिखे हैं, जिनमें से कुछ कविताएं 1967 से प्रकाशित होती रही हैं। अधिकतर अप्रकाशित ही हैं। आपकी वेदों की ज्योति जलाई रे, पावन आर्यसमाज तथा अजन्मी बेटी की गुहार जैसी बहुत सी रचनाएं चर्चित हैं। आपका पता है- **नागोराव शेष काम्पलेक्स, बिलासपुर (छत्तीसगढ़), फोन- ०९३०११४२७३७**

यज्ञ हवन, संध्या का पावन....

यज्ञ-हवन, संध्या का पावन जहां हो रहा काज है।
बिन मूरत, बिन घंटे का यह मंदिर आर्यसमाज है।।

छुआछूत या ऊंच-नीच का जहां न कोई भाव है।
जात-पात या नगर प्रान्त का जहां न कुछ अलगाव है।
द्वेष-दम्भ है नहीं तनिक भी, प्रेम परस्पर सब में।
एक-दूसरे से आपस में सबको स्नेह लगाव है।।
जहां गूंजती वेद, उपनिषद की पावन आवाज है।
बिन मूरत, बिन घंटे का यह मन्दिर आर्यसमाज है।।

स्वामी दयानन्द ने जिस पर अपना सब कुछ न्यौछारा।
लेखराम ने जिसकी खातिर हँस कर जीवन को वारा।।
श्रद्धानन्द शहीद हो गये, सीने पर गोली खाकर।
दक्षिण में थी बही आर्य वीरों की रक्तमयी धारा।।
ऐसे अमर शहीदों पर आर्यों को बेहद नाज है।
बिन मूरत, बिन घंटे का यह मन्दिर आर्यसमाज है।।

यज्ञ-हवन, संध्या का पावन जहां हो रहा काज है।
बिन मूरत, बिन घंटे का यह मंदिर आर्यसमाज है।।

आर्यावर्त केसरी द्वारा

विशेषांकों की श्रृंखला में

शीघ्र प्रकाशित विशेषांक

आर्य जगत के लेखक

विद्वान रचनाकारों व पाठकों से अनुरोध है कि एतदर्थ बहुमूल्य परिचयात्मक सामग्री व विज्ञापन आदि यथाशीघ्र भेजें। धन्यवाद! -सम्पादक

आर्यजगत के कवि (भाग-२)

डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ

माता श्रीमती भगवती देवी व पिताश्री जयन्ती प्रसाद के घर 07 जुलाई सन् 1938 को जन्मे बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ डी.लिट् की उपाधि प्राप्त हैं आपकी रचनाएं मधुमति, संकल्प, शेखावटी, गंध, नवीन, प्रतिश्रुति, पंजाब सौरभ, काव्य भारती आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं।

श्री कुलश्रेष्ठ सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष हैं व महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के पत्रकारिता विभाग में विज़िटिंग प्रोफेसर हैं। श्री कुलश्रेष्ठ को 15 संस्थाएं सम्मानित कर चुकी हैं। बहुआयामी प्रतिभा के धनी डॉ. कुलश्रेष्ठ की पत्रकारिता पर गहरी पकड़ है। लगभग तीन दर्जन पुस्तकें लिखकर आपने पत्रकारिता जगत में खासी पहचान बनाई है। पत्रकारिता के साथ-साथ लोक साहित्य पर भी आपकी लेखनी निरन्तर चलती रही है। आपने पृथ्वी राज रासो का लोकतान्त्रिक अध्ययन विषय पर महत्वपूर्ण शोध किया है। आपका पता है-

73/180, मानसरोवर,
जयपुर-302020
मोबा. : 09460813541

मानव को मानव में बदलें

शिखरों पर चढ़ यज्ञ करें हम
मन में गहरे अर्थ गढ़े हम
कोई भूखा
रहे न पथ में
थोड़ा-थोड़ हव्य रखे हम
ऐसी कुछ भी
करें न भूलें
और न अब अनुतमा सहे हम।
मानव को मानव में बदले।
जब भूले हैं कर्म सनातन
यजन नहीं करते यों पावन
बड़े भोर व वैदिक स्वर गहते
तभी प्रकृति लगती मनभावन
बिती तमकी
रातें अब तो
ज्ञान ज्योति के पांव गहे हम।
दानव को मानव में बदलें।
मनु की कथा न भूले फिर से
अतिशयता से मुख हम मोड़े।
अजिर स्रोत बन गई ऋचाएं
उनको अनुक्षण मन में जोड़े
कुंठित मन का
अश्व जगाएं
भाष्यतों का भनन करें हम।
दीर्घातप में, कुछ तो बदलें
आज विश्व में मांग उठी है
योग कर्म की धार उमड़ती
अन्तरिक्ष में आज विहंसती
यज्ञ ऋचाएं ताने जड़ती
आर्यजनों ने
क्यों कर भूला
यज्ञ धर्म ही जब रहा नियम
अभी समय है, हम फिर बदलें।

महेश कुमार 'क्रान्ति'

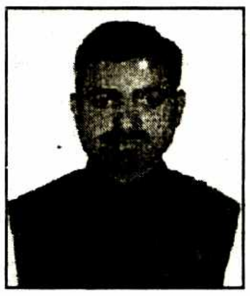

महेश कुमार क्रान्ति का जन्म जनपद गौतमबुद्ध नगर के तहसील दादरी के ग्राम कलौदा में श्री चन्दर सिंह के घर 12 जून सन् 1979 को हुआ। स्नातक पास श्री क्रान्ति लेखक, कवि, पत्रकार हैं। इनकी गीत क्रान्ति, किसान और जवान, अर्जुन सावधान पुस्तकें अमर स्वामी प्रकाशन विभाग, गाजियाबाद से प्रकाशित हो चुकी हैं। जिनके द्वारा देश व समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करने का प्रयास किया गया है। इनकी रचनाएं प्रेरक एवं समाज में नव चेतना जगाने वाली हैं। श्री क्रान्ति गुरुकुल ज्ञान आलोक, बुलन्दशहर के प्रबन्धक हैं।

आपका पता है-

कवि महेश कुमार 'क्रान्ति'
प्रबन्धक- गुरुकुल ज्ञान आलोक
ग्राम व पोस्ट- नगलिया,
उदयभान, जनपद-
बुलन्दशहर-203129 (उ.प्र.)
मोबा. : 09411664040

भारत दर्पण-तब से अब तक

भानुमती का बना पिटारा लोगों संविधान हमारा।
सौ में नब्बे बेईमान हैं फिर भी देश महान हमारा।
एक धर्म था सारे जग में वेदों की प्रणाली का
यज्ञ रहा प्रतीक उस समय समृद्धि खुशहाली का
खिला हुआ था यह बगीचा सदाचार से माली का
नहीं उपासक पाता था यहां गॉड खुदा और काली का
कोई बाईबिल कोई इंजील, गीता कहीं पुराण हमारा।
देकर वेद ज्ञान ईश्वर ने इसे महान बनाया था
गंगा यमुना सी नदियों से लोगों इसे सजाया था
कश्मीर जो स्वर्ग धरा का इसी देश में पाया था
लेकर जन्म महापुरुषों ने इसका मान बढ़ाया था
मगर स्वार्थी तत्वों ने सब खाया स्वाभिमान हमारा।

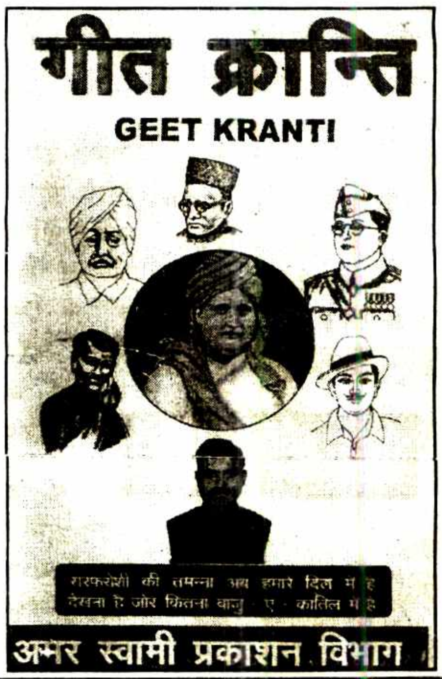

बिशनलाल वर्मा

श्री गांधी आश्रम से सेवानिवृत्त बिशनलाल वर्मा का जन्म माता श्रीमती न्यादरी देवी एवं पिता श्री डालू सिंह के घर ग्राम जमना खास (अमरोहा) में 13 जुलाई 1937 को हुआ। कई पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएं छपती रहती हैं। आपका रचना संग्रह अभी अप्रकाशित है। काव्य गोष्ठियों में आपको सम्मान प्राप्त हुए हैं। आपका पता है- ग्राम व पोस्ट- जमना खास, जिला- अमरोहा (उ.प्र.), मोबा. : 9759253926

वेद ज्ञान चाहिए

आज मेरे देश को वेद-ज्ञान चाहिए
आज सारे विश्व को वेद-ज्ञान चाहिए।
जन्म से भी पूर्व के
और जन्म बाद के
पूर्ण संस्कार हों
विधि के अनुसार हों
ब्रह्मचारी और शिक्षित नौजवान चाहिए।
आज मेरे देश को वेद-ज्ञान चाहिए।
बमों की न शोध हो
न विनाश नृत्य हो
प्रगति के नाम पर
न विनष्ट सत्य हो
विहंसि वसुन्धरा- विज्ञान चाहिए।
आज मेरे देश को वेद-ज्ञान चाहिए।
वेद का विज्ञान हो
सामवेद मान हो
आयुर्वेद धनवन्तरी
रोगों का निदान हो
आदि सृष्टि ऋषियों का पुन: ज्ञान चाहिए।
आज मेरे देश को वेद-ज्ञान चाहिए।
राष्ट्र धर्म- धर्म हो
मातृशक्ति हो सबल
विश्व का सिरमौर हो
प्यारा भारत ये वतन
नेता अभिनेता नहीं, विज्ञानवाद चाहिए।
आज मेरे देश को वेद-ज्ञान चाहिए।

ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा- २०१४

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, आर्यावर्त कॉलोनी, मुरादाबादी गेट, अमरोहा के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द बोधोत्सव, टंकारा (गुजरात) यात्रा- २५ फरवरी से २ मार्च २०१४

प्रस्थान : 25 फरवरी 2014 को प्रात: 7 बजे मुरादाबाद से आला हज़रत एक्सप्रेस 4311 अप। 24 फरवरी 2014 विश्राम एवं रात्रि भोजन, आर्य समाज मंदिर, गंज स्टेशन मार्ग, मुरादाबाद, दूरभाष- 09410065832 **वापसी :** 02 मार्च 2014 रात्रि अहमदाबाद मेल से देहली तक।

: परिभ्रमण कार्यक्रम :

पोरबन्दर, द्वारिका, सोमनाथ मंदिर, सावरमती आश्रम, अहमदाबाद आदि दर्शनीय स्थल

प्रस्थान से लेकर आगमन तक रेल-बस आरक्षण, भोजन, जलपान, आवास-निवास, परिभ्रमण की समुचित व्यवस्था उप सभा द्वारा होगी। **आप 3000/- रूपये का ड्राफ्ट आर्य उप प्रतिनिधि सभा ज्योतिबा फुले नगर, अमरोहा के नाम से खाते में भिजवा दें या कार्यालय अमरोहा को नकद हस्तगत कराकर रसीद प्राप्त कर लें। राशि 3000/- 31 दिसम्बर 2013 तक प्राप्त हो जानी चाहिए।** समुचित व्यवस्था में आपका सहयोग प्रार्थनीय।

यात्रियों को आवश्यक निर्देश :- ● गाड़ी के निर्धारित समय से आधा घंटा पूर्व सम्बन्धित रेलवे स्टेशन पर पहुंचना। ● यात्रा में कम से कम सामान साथ रखें, ● ओढ़ने, बिछाने की चादर, छोटी-थाली, गिलास, लोटा, कटोरी, मग्गा, पानी की बोतल, टॉर्च, चाकू, नोट बुक, पैन्सिल, मतदाता परिचय-पत्र, दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं तौलिया, तहमद, शेविंग का सामान, तेल आदि। ● बहुमूल्य सामान साथ न रखें। ● अपनी औषधि साथ रखें। ● आवास या निकट के दूरभाष नम्बर कोड सहित अपना पूरा पता, आयु सहित भेजें। ● आप कब और कहां किस प्रकार पहुंच रहे हैं, सूचित करें। ● परिभ्रमण काल में आवास आर्यसमाज मन्दिर, पोरबन्दर, अहमदाबाद में रहेगा। ● कार्यक्रम संयोजक को व्यवस्था परिवर्तन का अधिकार है। ● राशि व्यास्थापक श्री वीरेन्द्र कुमार जी आर्य, सरायतरीन के पास भी जमा की जा सकती है।

आओ! ऋषि जन्मभूमि की यात्रा का कार्यक्रम बनाएं...

□ श्रीराम गुप्ता- संरक्षक, □ डॉ. अशोक कुमार आर्य- प्रधान (09412139333), □ डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार- मंत्री (09412634672), □ शिव चरन सिंह आर्य- कोषाध्यक्ष, □ नरेन्द्र कान्त गर्ग- संयोजक (09837809405), □ वीरेन्द्र कुमार आर्य- व्यवस्थापक (9927892665)

अमृत रस बरसे जग चखने को तरसे

देवनारायण भारद्वाज

''माता जी रोज सुबह घर में हवन करती थीं, और एक बड़े पीतल के गिलास में से पानी लेकर आचमन करती थीं। वह पीतल का गिलास उनको जीवन में सदा याद दिलाता था कि कैसी-कैसी मुसीबतें आती हैं, जाती हैं, घबराना नहीं चाहिए।''

उक्त पंक्तियां उद्धृत की गयी हैं अस्सी वर्षीय आर्य संन्यासी स्वामी बलराम निर्वृत्तानन्द सरस्वती जी के लेख से, जो आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर (हरिद्वार) की मासिक पत्रिका 'स्वस्ति पन्था:' के अप्रैल 2007 के अंक में छपा है। इस लेख में उन्होंने पूज्य पिता स्व0 जगतराम सेठी के आर्य बनने की कहानी सुनाई है कि किस प्रकार से भारतीय स्वाधीनता संग्राम, आर्यसमाज के प्रगति-अभियान, स्त्री-शिक्षा और अछूतोद्धार के क्रान्तिकारी आन्दोलन में अपने युवाकाल से ही व्यस्त हो गये थे, प्रत्युत् अमृतत्व पद के अधिकारी भी बन गये थे। उक्त पत्रिका मेरे हाथ में आयी और जब-जब मैंने इस लेख को पढ़ा, मेरी आंखें आंसुओं से डबडबा गयीं। यदि मैं उस अमरगाथा को यहां पर दोहराने बैठ गया, तो यह लेख तो उसी से भर जाएगा, जिसे इच्छुक पाठकगण उस पत्रिका से पढ़ सकते हैं। यहां पर तो हमें यह दिखाना है कि जो लोग हवन करते हैं और अमृत के आचमन करते हैं, वे इस अमृत को चख पाते हैं- छक पाते हैं, या यूं ही पीकर छोड़ देते हैं।

''ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा। ओं अमृतापिधानमसि स्वाहा। ओं सत्यं यश: श्रीर्मयि श्री: श्रियतां स्वाहा।।'' यह ध्वनि कहां गुंजायमान होती है? आर्यसमाज मन्दिर में या जहां आर्य का आवास है। धन्य हैं महर्षि दयानन्द, धन्य है उनकी पंच महायज्ञ प्रणाली, जिसने अमृत वर्षा की रसधार फुहार को सर्वत्र सहज सुलभ कर दिया है। नीचे अमृत का आधार, ऊपर अमृत का आवरण, बीच में आचमनकर्ता के साथ है- सत्य, यश, श्री एवं शोभा का साम्राज्य। हथेली में भरकर जल का पान तो बहुत कर लेते हैं, पर क्या वे सभी इस आचमन के अमृत रस का आभास कर पाते हैं? अधिकांश तो ''सर्वं वै पूर्ण स्वाहा'' बोलकर उठ जाते हैं और अमृत रस को यज्ञ वेदी पर ही छोड़कर चले आते हैं, वेदमाता हमें पग-पग पर इस अमृत रस पान के लिए प्रोत्साहित करती है।

अमृतं जातवेदसं तिरस्तमांसि दर्शतम्। घृताहवनमीड्यम्।। (ऋ08.74.5)।। अर्थात् हे ज्ञानी जनों (अमृतम्) अविनश्वर व मुक्तिदाता (जातवेदसम्) जिससे सर्व विद्या, धन आदि उपजे हैं, और हो रहे हैं, जो (तमांसि तिर:) अज्ञान रूपी तम को दूर करने वाला है। (दर्शतम्) दर्शनीय (घृताहवनम्) घृतादि पदार्थदाता और (ईड्य) वन्दनीय है- उसकी कीर्ति गाओ। कीर्तिगाओं और उसे जीवन में अपनाओ। जो आचमन के जल का पान और इस अमृत का अनुपान कर लेता है, वह यज्ञवेदी से रीता नहीं, जीता-जागता और चमकता हुआ उठता है। इनमें से कुछ तो ऐसे महापुरुष बन जाते हैं, जो अपने व्यक्तित्व, कृतित्व एवं वक्तृत्व के द्वारा इतने ऊंचे उठ जाते हैं, जो सूर्य-चन्द्र की भांति इतिहास के आकाश में छा जाते हैं। कोई उन्हें बिना देखे रह नहीं सकता, पर कुछ ऐसे तारागण होते हैं, जो अपने-अपने क्षेत्र में ध्रुव, मंगल, बुध, वृहस्पति की भांति यथोचित ज्ञान प्रभावान तो होते हैं, किंतु इन्हें गहन ध्यान से ही देखना पड़ता है।

इनसे मिलिए- यह हैं चन्द्रपाल गुप्त, जो इन्हीं में से एक हैं, जिनके जीवन में यज्ञ-अमृत रस की वर्षा हुई है। गुप्त जी चौरासी वर्ष की आयु में भी युवा प्रतीत होते हैं। अत्यंत परिश्रमी जानकर उच्चाधिकारियों ने इनकी बैंक सेवा में नियुक्ति कर दी। चार वर्ष बाद भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हो गयी। स्वतंत्रता दिवस समारोह में भाग लेने के लिए चार दिन का अवकाश राष्ट्रीय स्तर पर घोषित हुआ। बैंक प्रबन्धक ने पिछले अवशेष कार्य को पूर्ण करने के लिए सभी कर्मचारियों को मुख्यालय छोड़ने की अनुमति नहीं दी। राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत गुप्त जी अवकाश में न केवल समारोह में भाग लेने दिल्ली चले गये, प्रत्युत उन्होंने राष्ट्रीय पर्व की उपेक्षा का परिवाद भी शासन स्तर पर कर दिया। फलस्वरूप गुप्त जी को निलम्बित कर दिया गया गया। पुन:स्थापना के लिए चलते-चलते इनका अभियोग सर्वोच्च न्यायालय तक पहुंच गया। बैंक अध्यक्ष एवं चन्द्रपाल गुप्त को परस्पर समझौता करने के लिए तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश महोदय ने प्रेरित किया। मुख्य न्यायाधीश ने गुप्त जी से कहा कि इस दस वर्ष के अन्तराल में आपको जितने धन की हानि हुई हो, वह बता दीजिए। इसकी क्षतिपूर्ति करते हुए आपको सेवा में ले लिया जाए। गुप्त जी ने कह दिया कि मुझे कोई हानि नहीं हुई है, क्योंकि मैंने अपने श्रम से बस-परिवहन का व्यवसाय कर लिया था। मुझे तो सेवा में रख लिया जाए- यही पर्याप्त है। बैंक के अध्यक्ष ने वक्तव्य दिया- मुख्य न्यायाधीश महोदय! आप इन्हें क्षतिपूर्ति चाहें जो दिलवा दें। मुझे इन्हें सेवा में नहीं रखना है। मुख्य न्यायाधीश श्री गुप्त की ईमानदारी व सत्यवादिता से प्रभावित थे। वे बोले- बैंक अध्यक्ष महोदय यदि आप गुप्त जी को रखते हैं तो ठीक है, अन्यथा इनके वेतन के अनुसार क्षतिपूर्ति करते हुए गुप्त जी की पुन:स्थापना का आदेश मेरे द्वारा पारित कर दिया जाएगा। बैंक अध्यक्ष ने कह दिया- हां ठीक है, और गुप्त जी फिर से सेवा में आ गये। इनकी अर्द्धांगिनी के पितामह ने महर्षि दयानन्द के दर्शन किये थे, जो दैनिक याज्ञिक आजीवन रहीं। इस अमृत रसपान का ही परिणाम है कि गुप्त जी आर्यसमाज में प्रेरणा-स्रोत व आदरणीय माने जाते हैं। इस आचमन अमृत रसपायी स्व0 होतीलाल नागर आर्यसमाज का सत्संग, सत्यार्थ प्रकाश का पाठ, और उसकी कथा करना-यह उनका दैनिक कर्तव्य था। प्रात:काल उस बड़े उद्यान में सत्यार्थप्रकाश लेकर पहुंच जाते थे, जहां नगर के संभ्रान्त नागरिक बड़ी संख्या में भ्रमण को आते थे। वहां अनेक लोग, उनके इस पाठ-संवाद का लाभ उठाते थे, शंका समाधान करते थे। नागर जी अपार यज्ञ प्रेमी थे। होली, दीवाली व अन्य पर्वों पर बड़े पारिवारिक यज्ञ में जनसमूह को भी बुला लेते थे। लगभग पचासी वर्ष की आयु तक सक्रिय बने रहे। मृत्यु के दिन इन्होंने ओ3म् संस्मरण व उच्चारण की झड़ी लगा दी। अपने बड़े पुत्र को अपने पास बैठाया, और उसकी गोद में सर रखकर लेट गये। उनसे कहा कि मेरे साथ ओ3म् बोलो। एक बार, दो बार और तीसरी बार ओ3म् ध्वनि के साथ प्राण त्याग कर अपनी आत्मा को अमृतमयी, परमात्मा की गोद में समर्पित कर दिया। किसे मिलेगा अपने प्राणप्यारे से मिलने का इतना सुन्दर शुभावसर? उसी को जिसने अमृत रस का पान किया होगा।

विद्यावृद्ध पिचासी वर्षीय वैद्य विजय गुप्त कौशिक, आज वे कविराज हैं, वैद्यराज हैं, हिन्दी प्रवक्ता पद से सेवानिवृत्त हैं। निज पुत्र-पुत्रियों को सुयोग्य शिक्षित सम्पन्न आत्मनिर्भर करते हुए समाज में अपना प्रतिष्ठित स्थान बनाया है। उनका कथन है- मनुष्य जन्म लेता है, मर जाता है- कोई सत्कार्य की प्रेरणा नहीं छोड़ जाता है, तो पशु और उसमें अन्तर ही क्या है? सहसवान (बदायूं) में जन्मे तब के ज्ञानचन्द्र के पिता की छाया बचपन में ही उठ गयी थी। बच्चों को पढ़ा-पढ़ा कर, अपनी पढ़ाई की। अग्रज सिद्धहस्त वैद्य इनसे खरल में जड़ी-बूटी कुटवाने तक ही सीमित रखना चाहते थे। एक दिन इन्होंने अग्रज से शिक्षा में सहायता की बात क्या कह दी, उन्होंने इनसे सर्व-संबन्ध विच्छेद की घोषणा कर दी। आर्यसमाज के यज्ञ-अमृत रस का पान कर धवल विमल सुन्दर छवि का यह ब्रह्मचारी ''ओम मेरे सोम मेरे, प्राण जीवन व्योम मेरे'' गाते हुए सहसवान के चौराहे पर प्रभु-पथ-प्रतीक्षा में आकर खड़ा हो गया। पीछे से इनके कन्धे पर एक हाथ का स्पर्श हुआ- महाशय ज्ञान चन्दर! मेरे बच्चों को पढ़ा दिया करो- यह लो अग्रिम राशि पठन-पाठन प्रबन्ध के लिए। ज्ञानचन्द्र ने पीछे मुड़कर देखा, तो उन डाक्टर महोदय को नमस्ते करके अभिवादन किया, कन्धे पर जिनका हस्तस्पर्श हुआ था। सचमुच वह प्रभु हस्त का स्पर्श ही था, जो इनके जीवन का आधार-स्तम्भ सिद्ध हुआ। पढ़ते-पढ़ाते उच्च शिक्षा प्राप्त की, सम्मानजनक सेवा पद प्राप्त किया, और सर्वाधिक महत्वपूर्ण यह है कि कन्या गुरुकुल सासनी की ब्रह्मचारिणी चन्द्रप्रभा जी इनकी सहधर्मिणी बनी। स्मृतिशतक, गीतागुंजन एवं उद्घोष नामक काव्य संकलन का हिन्दी साहित्य में एक स्थान विशेष रहेगा ही, पर महानगर एवं समीपस्थ क्षेत्रों में आयोजित धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक सभा-समारोह वैद्य विजयगुप्त कौशिक की वक्तृता बिना अपूर्ण समझे जाते हैं। ये तीन ही नहीं, और भी बहुत हैं, जिन्होंने इस यज्ञ-आचमन के अमृतरस को चखकर स्वजीवन को दैदीप्यमान किया, पर इनसे कई गुना अधिक वे हैं, जो आचमन तो करते रहते हैं, नित्य नित्य अनेक बात करते हैं, किंतु वह उनके लिए अमृत सिद्ध नहीं हो पाता है, कहीं हम भी तो उन्हीं में नहीं हैं। आइए विचारें और आगे इस यज्ञ-अमृत रस के स्वागत के लिए तैयार हो जाएं। इन अशरीरी यशस्वी अमृत आत्माओं को श्रद्धाञ्जलि।

-वरेण्यम्,
अवन्तिका- प्रथम, रामघाट मार्ग,
अलीगढ़ (उ0प्र0)

आयुष्मान् भव

(दीर्घ आयु प्राप्त करो)

इस स्तंभ में स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती 'वेदभिक्षु' द्वारा लिखित पुस्तक 'आयुष्मान् भव' में संग्रहीत वेदमंत्र अर्थ सहित प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(३१)

उत्तम जीवन के लिए

यमाय घृतवद्धविर्जुहोत·प्र च तिष्ठत।
स नो देवेष्वा यमद्दीर्घमायु: प्र जीवसे।।

(ऋग्वेद, १०/१४/१४)

पदार्थ :- (यमाय) नियामक के लिए, (घृतवत् हवि: जुहोत) घृत के समान आहुति दो, (प्र च) और भली प्रकार, (तिष्ठत) स्थिर रहो, (स:) वह नियामक ईश्वर, (न:) हमें, (देवेषु) देवों= विद्वानों में, (यमत्+दीर्घमायु:) प्राप्त करावे दीर्घायु को, (प्र-जीवसे) उत्तम जीवन के लिए।

भाव :- यज्ञ करने वाले के समान, योगीजन स्वयं के जीवन को आहुति बनाकर यज्ञरूपी नियामक प्रभु के लिए सर्पित कर दें, तब वे अमर हो जाते हैं। दीर्घायु के लिए पवित्र समर्पण उत्तम है।

(३२)

मौत को दूर करो

-मृत्यो: पदं योपयन्तो यदैत द्राघीय आयु: प्रतरं दधाना:।
आप्यायमाना: प्रजया धनेन शुद्धा: पूता भवन यज्ञियास:।।

(ऋग्वेद, १०/६८/२)

पदार्थ :- (मृत्यो: पदं योपयन्त:) मृत्यु के पद या हेतु को परे करते हुए, (यत्+आ+एत) जब आगे बढ़ोगे, (द्राघीय:) दीर्घ या लम्बी, (आयु:) उम्र को, (प्रतरं) पार करो, (दधाना:) धारण करते हुए। (आप्यायमाना:) संयुक्त होते हुए, (प्रजया-धनेन) सु-सन्तान और पवित्र धन के द्वारा, (शुद्धा: पूता: भवत) आप लोग, शुद्ध और पवित्र होओ, हे, (यज्ञियास:) यजनशील (परार्थजीवन) जनों! ।

भाव :- जिनका जीवन प्राणिमात्र की भलाई के लिए है, वे मननशील सत्पुरुष जन मृत्यु के कारणों को पांव की ठोकर मारकर दूर कर देते हैं। शुद्ध और पवित्र मन वालों की आयु दीर्घ हाती है। ऐसे मन वाले औरों को भी ''आयुष्मान भव'' कहते हैं।

(३३)

जियो, हँसते-खेलते

इमे जीवा वि मृतैराववृत्रन्नभूभ्दद्रा देवहूतिर्नो अद्य।
प्रांचो अगाम नृतये हसाय द्राघीय आयु: प्रतरं दधाना:।।

(ऋग्वेद, १०/६८/३)

पदार्थ :- (इमे जीवा:) से जीवित मनुष्य, (वि-मृत्यै: आववृत्रन्) विशेष रूप से मरे हुओं से घिरे हुए हैं, (अभूत+भद्रा) हो कल्याणकारी, (न: देव+हूति:) हमारे द्वारा की गयी देवों की प्रार्थना, (अद्य) आज, (प्रॉंच:) सदा सामने या आगे, (अगाम) बढ़ें या चलें, (नृतये-हयास)हँसते- खेलते हुए, (द्राघीय आयु:) सु-दीर्घ व सुखद आयु, (प्रतरं) फैलाते हुए, (दधाना:) धारण करते हुए।

भाव :- धरा पर सब जीवन मृत्यु से घिरा हुआ है। चारों ओर मौत का ताण्डव-नृत्य हो रहा है। श्मशानों में सदा चिताएं जल रही हैं। इस पर भी देव-हूति: = दिव्य उपासक जन यज्ञमय जीवन के साथ हँसते-खेलते हुए जीवन जीते हैं, और दीर्घायु होकर ''आयुष्मान भव'' कहते हैं।

●आर्यसमाज, विहारीपुर, बरेली 09412372179

हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द का योगदान

स्वामी दयानन्द जी महाराज ने जो साहित्य हिन्दी को दिया है, वह लगभग दस हजार पृष्ठों में समाहित है। उनका यह साहित्य जितना विपुल है, उतना ही उपयोगी भी है। राष्ट्रीयता के भाव को सुदृढ़ करने के लिए स्वामी दयानन्द ने जिन विभिन्न उपायों को क्रियान्वित करने की योजना बनाई उनमें सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए एक राष्ट्रभाषा के प्रचार और प्रसार की योजना सर्वप्रमुख थी। **यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि स्वामी जी की मातृभाषा हिन्दी नहीं थी। वे संस्कृत के निष्णात विद्वान् थे और पर्याप्त समय तक गंगातटवर्ती प्रान्तों का भ्रमण करते हुए संस्कृत में ही सम्भाषण करते तथा अपने विचारों का आदान-प्रदान करते रहे। उनकी संस्कृत अत्यन्त सरल, मधुर एवं प्रसाद गुणयुक्त होती थी। कलकत्ता प्रवास के समय उनके जीवन में एक ऐसी घटना घटी जिससे उन्हें यह विदित हो गया कि संस्कृत के स्थान पर लोकभाषा हिन्दी का प्रयोग ही अधिक समीचीन एवं उपयुक्त है।** जब वे कलकत्ता में 23 फरवरी 1873 ई0 को गौराचान्ददत्त के गृह पर वक्तृता देने उपस्थित हुए तो संस्कृत कालेज के उपाचार्य पं0 महेश चन्द्र न्यायरत्न ने उनके संस्कृत व्याख्यान का बंगला अनुवाद प्रस्तुत किया। दुर्भाग्यवश न्यायरत्न महाशय अपने पक्षपात एवं पूर्वाग्रह के कारण स्वामीजी के भावों का ठीक-ठीक अनुवाद नहीं कर सके, फलतः उनका यह बंगला अनुवाद वक्ता के मूल आशय के विपरीत हो गया। संस्कृत के उपस्थित छात्र-समुदाय ने अनुवाद के कार्य पर जब आपत्ति की तो न्यायरत्न महाशय सभा का परित्याग कर चले गये। इस घटना ने स्वामीजी के चिंतन को एक नवीन दिशा प्रदान की। साथ ही ब्रह्म समाज के नेता केशवचन्द्र सेन ने भी उन्हें हिन्दी में बोलने के लिए कहा और उदारमना स्वामीजी इस तर्कसंगत प्रस्ताव से सहमत हो गये।

स्वामीजी की प्रथम हिन्दी वक्तृता काशी में हुई। यद्यपि अभी तक परिष्कृत और परिमार्जित हिन्दी में विचाराभिव्यक्ति उनके लिए सहज नहीं थी, अनायास ही संस्कृत के वाक्य के वाक्य उनके मुँह से निकल जाते थे, तथापि वे आर्यभाषा के प्रति पूर्ण निष्ठावान रहकर उसके प्रचार एवं प्रसार में संलग्न रहे। कालान्तर में जब आर्य समाज की स्थापना हुई तो उसके प्रारम्भिक नियमों में संस्कृत के साथ आर्यभाषा को भी महत्वपूर्ण स्थान मिला तथा 'आर्य प्रकाश' नामक एक पत्र भी हिन्दी में प्रकाशित करने की व्यवस्था की गई। यह ज्ञातव्य है कि स्वामी दयानन्द भारत की जनभाषा हिन्दी को 'आर्यभाषा' के नाम से ही अभिहित करते थे। इस नामकरण में उनका लक्ष्य हिन्दी को समग्र आर्यावर्त (भारतवर्ष) को एकमात्र प्रधान भाषा के रूप में स्वीकृति प्रदान कराना था। 'आर्य' शब्द अपनी गंभीर एवं उदात्त अर्थवत्ता के कारण एक सर्वस्वीकृत अभियान है, इसी प्रकार 'आर्यावर्तवासियों' की भाषा को 'आर्यभाषा' कहना नितान्त समीचीन ही था। राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के सार्वत्रिक प्रचार-प्रसार का जो मधुर स्वप्न स्वामीजी ने संजोया था, उसे व्यावहारिक रूप प्रदान करने के लिए भी वे कृतसंकल्प थे। अब वे मौखिक प्रचार के साथ-साथ साहित्य लेखन में भी हिन्दी का प्रयोग करने लगे। 1875 में उन्होंने अपनी प्रमुख कृति सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी में ही लिखकर प्रकाशित की। यद्यपि इस समय तक उनका हिन्दी लेखन अधिक सशक्त, प्रवाहपूर्ण एवं व्याकरण सम्मत नहीं हो पाया था, परन्तु कालान्तर में जब उन्होंने इस ग्रन्थ का संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण प्रकाशित किया तो उसकी भाषा अधिक परिवर्द्धित, शैली अधिक प्रौढ़ तथा अभिव्यक्ति अधिक सशक्त हो चुकी थी। यहाँ स्वामीजी की हिन्दी शैली का अध्ययन अपेक्षित नहीं है किन्तु यह बताना आवश्यक है कि उनके द्वारा हिन्दी प्रचार की जो प्रेरणा उनके अनुयायियों को मिली उसी के फलस्वरूप हिन्दी राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित हो सकी। **स्वामी जी ने राष्ट्रभाषा के प्रयोग पर बल दिया। हिन्दी को अधिकाधिक व्यापकता प्रदान करने के लिए सभी प्रयत्नों का उन्होंने समर्थन किया।** 1882 ई0 में भारत के विद्यालयों में भाषा के अध्ययन विषयक् समस्या की जानकारी प्राप्त करने के लिए डब्ल्यू0 डब्ल्यू0 हण्टर की अध्यक्षता में एक आयोग स्थापित किया गया। आयोग ने देशवासियों की भाषा विषयक सम्मति जाननी चाही। उस समय स्वामीजी ने अनेक पत्र लिखकर आर्य-समाजों को यह प्रेरणा दी कि वे हण्टर कमीशन के समक्ष हिन्दी के प्रश्न को दृढ़ता के साथ प्रस्तुत करें तथा उसे विभिन्न प्रान्तों में शिक्षा का माध्यम बनाने का प्रयास करें। इस सम्बन्ध में उन्होंने आर्य समाज फर्रुखाबाद के मन्त्री तथा उसी नगर के निवासी बाबू दुर्गाप्रसाद को जो पत्र लिखे हैं, उनमें स्वामीजी के राष्ट्रभाषा विषयक् हार्दिक भाव स्पष्ट होते हैं। वे हिन्दी के प्रचार को मुख्य सुधार की एक मजबूत नींव मानते हैं।

स्वामीजी के आदेश और प्रेरणा की अनुकूल प्रतिक्रिया हुई और मेरठ, मुलतान, लाहौर, फर्रुखाबाद, लखनऊ आदि की आर्य समाजों ने कमीशन के द्वारा प्रकाशित प्रश्नों का उत्तर देते हुए विभिन्न प्रान्तों में हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाने पर जोर दिया। हिन्दी भाषी प्रान्तों की आर्य-समाजों ने तो कमीशन के सम्मुख हिन्दी का पक्ष रखा, पंजाब

जैसे प्रान्त की, जहाँ उर्दू, फारसी का व्यापक प्रचार था, आर्य समाजों ने भी हिन्दी माध्यम को शिक्षा के लिए उपयोगी स्वीकार करते हुए हण्टर कमीशन के समक्ष अपनी गवाहियाँ प्रस्तुत कीं। लाहौर आर्य समाज की ओर से लाला द्वारिकादास, एम0ए0 ने कमीशन के द्वारा प्रेषित प्रश्नावली का उत्तर देते हुए आर्य समाज के शिक्षा एवं भाषा विषयक् दृष्टिकोण को स्पष्ट किया। उन्होंने अपनी गवाही में इस बात पर दृढ़तापूर्वक बल दिया कि पंजाब में उर्दू और फारसी के स्थान पर हिन्दी के अध्ययन की सुविधा प्रदान की जानी चाहिए। साथ ही फारसी लिपि को दोषपूर्ण एवं अवैज्ञानिक बताते हुए देवनागरी लिपि के प्रचलन पर जोर दिया। पंजाब से जो पत्र- 'रिफार्मर', 'आर्य राष्ट्र' इत्यादि उर्दू में निकलते थे, उनकी भाषा भी हिन्दी होती थी। यहाँ राष्ट्रभाषा के सम्बन्ध में स्वामीजी के कार्यों का उल्लेख स्थाली-पुलाक न्याय से ही करना समीचीन है। वे अपने संपर्क में आने वाले पुरुषों को हिन्दी में कार्य करने की प्रेरणा देते रहते थे। अपने जोधपुर प्रवास काल में उन्होंने महाराजा जसवन्त सिंह को पत्र लिखते हुए राजकुमार को हिन्दी और संस्कृत सिखाने के लिए आग्रह किया। अपने ग्रन्थों पर उर्दू अथवा अंग्रेजी में अनुवाद किया जाना, उन्हें अभीष्ट नहीं था, क्योंकि उनकी यह धारणा थी कि यदि ये ग्रन्थ अन्य भाषाओं में अनुदित हो जायेंगे तो लोगों को संस्कृत तथा हिन्दी में इन्हें पढ़ने की रूचि नहीं रहेगी। निष्कर्षतः यह कहना सर्वथा उपयुक्त है कि स्वामीजी ने हिन्दी को राष्ट्रीयता के एक सुदृढ़ आधार के रूप में स्वीकार किया था। पं0 मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या के वार्तालाप के प्रसंग में उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया था-जब तक समस्त देशवासी एक धर्म, एक भाषा, एक आचार-विचार तथा एक ध्येय वाले नहीं बन जायेंगे तब तक जातीय एकता स्वप्नवत् ही रहेगी। निश्चय ही राष्ट्रीय एकता की सिद्धि में राष्ट्रीय भाषा की महत्ता को उन्होंने पूर्णतया अनुभव किया था।

आर्य समाज और राष्ट्रभाषा : महर्षि के निधन के पश्चात् उनका स्थानापन्न आर्य समाज अपने संस्थापक के बहुविध कार्यों को पूरा करने में तत्पर हो गया। इसी योजना के अनुसार उसने हिन्दी प्रचार को भी अपना लक्ष्य बनाया। अपने सुदीर्घ जीवन काल में राष्ट्रभाषा पद पर हिन्दी को प्रतिष्ठित करने के लिए आर्यसमाज ने अनथक प्रयत्न किये। इन प्रयासों का संक्षिप्त विवेचन भी पूर्णतया दुष्कर है क्योंकि हिन्दी भाषा के प्रचार एवं प्रसार तथा हिन्दी साहित्य लेखन का कोई ऐसा क्षेत्र अवशिष्ट नहीं है। जिसमें आर्य समाज ने अपने कृतित्व का परिचय न दिया हो। पंजाब जैसे प्रान्त में जहाँ हिन्दी जानने और पढ़ने वाले लोगों की संख्या अत्यन्त नगण्य थी, आर्य समाज ने हिन्दी प्रचार का उल्लेखनीय कार्य किया। परिणाम यह निकला कि पंजाब में हिन्दी की लोकप्रियता दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई और वहाँ शिक्षा, पत्रकारिता तथा धर्म प्रचार के लिए हिन्दी को मुक्त कण्ठ से स्वीकार कर लिया गया। इसी प्रकार आर्य समाज ने दक्षिण प्रान्तों में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ जो उपदेशक, भेजे उन्होंने भी अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी के माध्यम से धर्म का प्रचार किया। यह कार्यक्रम भारत तक ही सीमित नहीं रहा। अफ्रीका, गायना, मारीशस, फिजी, आदि देशों में जहाँ-जहाँ आर्य समाज प्रभावी भारतवासियों के माध्यम से पहुँचा वहाँ-वहाँ वह हिन्दी की विजय वैजयन्ती फहराता गया। परिणाम यह निकला कि आज विश्व भाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकृति मिलने की जो सम्भावना उत्पन्न हो गई है उनका बहुत कुछ श्रेय आर्य समाज को ही है। नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन में उपस्थित विदेशी प्रतिनिधियों ने इस तथ्य को मुक्त कण्ठ से स्वीकार किया है। जहाँ तक काव्य, नाटक, कथा, उपन्यास, तथा पत्रकारिता आदि की विभिन्न साहित्य विधाओं में कृतकार्यता प्राप्त कर राष्ट्रभाषा के साहित्य भण्डार को समृद्ध करने का प्रश्न है, आर्य समाजी साहित्यकार इस क्षेत्र में भी अपने दायित्व को पूरा कर चुके हैं। पं0 नाथूराम शर्मा 'शंकर', पं0 हरिशंकर शर्मा, पं0 अनूप शर्मा आदि कवियों, पं0 सुदर्शन, पं0 चन्द्रगुप्त विद्यालंकार आदि कथाकारों, पं0 रुद्रदत्त शर्मा, सम्पादकाचार्य पं0 पद्यम सिंह शर्मा आदि पत्रकारों एवं समालोचकों ने आर्य समाज से ही प्रेरणा पाकर हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि की है। स्वामी दयानन्द के मन्तव्यों से सहमत होना तो सम्भवतः सभी के लिए आज भी संभव न हो, पर न्याय-दृष्टि रखने वाले इतना तो अवश्य स्वीकार करेंगे कि हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में स्वामी जी की देन अनुपम तथा अविस्मरणीय है। हिन्दी सेवा के लिए उनका-सा संकल्प उनका-सा पांडित्य उनकी-सी अनथक तपस्या, उनका-सा स्वार्थत्याग, उनकी-सी सत्यप्रियता, उनकी-सी सात्विक ललक का अन्य निदर्शन मिलना यदि असंभव नहीं, तो कठिन अवश्य है।

दयानन्द युग : स्वामी दयानन्द ने अपनी विचारधारा, विद्वत्ता तथा वक्तृत्व शैली से उस युग के प्रत्येक साहित्यकार को प्रभावित किया-परिमाण में उनका साहित्य प्रायः उस युग के किसी लेखक विचारक से कम नहीं है। रचनाओं के परिमाण एवं प्राचुर्य-वय योग्यता, सत्यनिष्ठा, ख्याति, विचारधारा के आधार पर उस युग को दयानन्द युग कहना ही उचित है।

हिन्दी के पोषक सुरक्त से
पूरित सकल शिराएँ/
हिन्दी के जयघोषों से
अविरल करो दिशाएँ//

महर्षि दयानन्द का साहित्यिक योगदान

(1874 से 1883 तक)

ऋषि दयानन्द जी महाराज के विशाल साहित्य की सूची - केवल आठ वर्ष के कार्यकाल में यह साहित्य दस हजार पृष्ठों में समाहित है-

1. सन्ध्या, 2. भागवत खण्डन, 3. अद्वैतमत खण्डन, 4. गर्दभतापिनी उपनिषद् 5. सत्यार्थ प्रकाश, 6. पंच महायज्ञ विधि, 7. वेदभाष्य का नमूना, 8. वेदविरुद्ध मत खण्डन, 9. वेदन्ति ध्वान्त निवारण, 10. शिक्षापत्री ध्वान्त निवारण, 11. आर्याभिविनिय, 12. संस्कार विधि, 13. चतुर्वेद विषय सूची, 14.

वेदभाष्य का दूसरा नमूना, 15. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, 16. ऋग्वेद भाष्य, 17. यजुर्वेद भाष्य, 18. आर्योद्देश्य रत्नमाला, 19. भ्रान्ति निवारण, 20. अष्टाध्यायी भाष्य, 21. जन्म चरित्र, 22. संस्कृत वाक्य प्रबोध, 23. व्यवहार भानु, 24. गौतम अहल्या – सत्य कथा, 25. भ्रमोच्छेदन, 26. अनुभ्रमोच्छेदन, 27. गौकरुणानिधि, 28. वेदांगप्रकाश, 29. शास्त्रार्थ, 30. प्रवचन संग्रह, 31. विज्ञापन और पत्र, 32. आर्यसमाज के नियम व उद्देश्य, 33. स्वीकार पत्र, 34. आर्षग्रन्थों के अध्ययन एवं शोध के लिए पुस्तकें, 35. अन्य मत–मतान्तरों के अध्ययन एवं शोध के लिए उपयोगी पुस्तकें। ऋषि दयानन्द जी महाराज ने विविध रचनाएं लिखकर हिन्दी साहित्य के भण्डार की श्रीवृद्धि की है।

शैलीगत विशेषताओं का विवेचन :

हिन्दी गद्य रचना में स्वामी दयानन्द की अपनी व्यक्तिगत शैली है। विविध विषयों के विवेचन में उन्होंने विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया है।

●वेदार्थ शैली– वैदिक संहिताओं का आर्षरीति से भाष्य हिन्दी में। ●दार्शनिक शैली– विविध पद्धतियों से दार्शनिक तत्वों का निरूपण। ●सूत्रात्मक शैली– आर्योद्देश्य रत्नमाला स्वमन्तव्य–अमन्तव्य प्रकाश में स्पष्ट दर्शन। ●ऐतिहासिक शैली– विचारों की अभिव्यक्ति में ऐतिहासिक क्रम को अपनाया। ●प्रश्नोत्तर शैली– सत्यार्थ प्रकाश, व्यवहार भानु में प्रश्नोत्तर शैली दर्शन। ●दृष्टांत शैली– विचारों को स्पष्ट और रोचक बनाने के लिए उदाहरण और दृष्टान्त। ●उद्धरण बहुलता– मन्तव्यों, सिद्धांतों की पुष्टि के लिए शास्त्रों के प्रमाण। ●भूमिका अनुभूमिका– अपने ग्रन्थों के अभिप्राय को ठीक से जानने के लिए। ●भाषा की दृष्टि से प्रयुक्त शैलियां– तर्कयुक्त मनोवेगों की सशक्त अभिव्यक्ति, इति वृत्तात्मक शैली, व्यंग्य, सरल व स्पष्ट शैली, विनोद की शैली, कठोर आक्रमणात्मक शैली।

ऋषि दयानन्द की भाषा के गुण :

ओज–प्रवाह चित्रात्मकता– खड़ी बोली का परिष्कृत एवं प्रांजल स्वरूप–भावना रूप सशक्त भाषा–विषयानुरूप सशक्त भाषा–शब्द भण्डार की अभिवृद्धि। स्वामी दयानन्द की प्रथम हिन्दी वक्तृता काशी में हुई। यद्यपि अभी तक परिष्कृत और परिमार्जित हिन्दी में विचाराभिव्यक्ति उनके लिए सहज नहीं थी, अनायास ही संस्कृत के वाक्य उनके मुंह से निकल जाते थे, तथापि आर्य भाषा के प्रति पूर्ण निष्ठावान रहकर उसके प्रचार एवं प्रसार का जो मधुर स्वप्न स्वामी जी ने संजोया था, उसे व्यावहारिक रूप प्रदान करने के लिए भी कृतसंकल्प थे। मौखिक प्रचार–प्रसार के साथ–साथ साहित्य लेखन में भी हिन्दी का प्रयोग करने लगे। 1875 में उन्होंने अपनी प्रमुख कृति 'सत्यार्थ प्रकाश' को हिन्दी में ही लिखकर प्रकाशित किया, यद्यपि इस समय तक उनका लेखन अधिक सशक्त, प्रवाहपूर्ण, एवं व्याकरणसम्मत नहीं हो पाया था। परन्तु कालांतर में जब उन्होंने इस ग्रन्थ का संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण प्रकाशित किया, तब उसकी भाषा अधिक परिवर्त्तित, संशोधित, शैली अधिक प्रौढ़ तथा अभिव्यक्ति अधिक सशक्त हो चुकी थी। यहां स्वामी जी की हिन्दी शैली का अध्ययन अपेक्षित नहीं है, किंतु यह बताना आवश्यक है कि उनके द्वारा हिन्दी प्रचार–प्रसार की जो प्रेरणा उनके अनुयायियों को मिली, उसी के फलस्वरूप हिन्दी राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित हो सकी। स्वामी जी के मंतव्यों से सहमत होना तो संभवतः आज भी संभव न हो, पर न्यायदृष्टि रखने वाले इतना तो अवश्य स्वीकार करेंगे कि हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में स्वामी जी की देन अनुपम तथा अविष्मरणीय है। हिन्दी सेवा के लिए उनका–सा संकल्प, उनकी–सी अनथक तपस्या, उनकी–सी ललक, उनका–सा स्वार्थत्याग, और उनकी–सी सत्यप्रियता मिलना यदि असम्भव नहीं, तो कठिन अवश्य है।

मानस भवन में आर्यजन, जिसकी उतारें आरती।
भगवान भारतवर्ष में, गूंजे हमारी भारती।।

◆आर्य उपप्रतिनिधि सभा, अमरोहा द्वारा प्रकाशित ट्रैक्ट से साभार

आर्यों की दृष्टि में 'योगीराज श्रीकृष्ण'

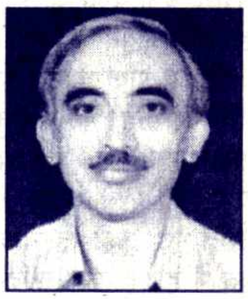

ओमप्रकाश भोला

आज से लगभग साढ़े पांच हजार वर्ष पहले भगवान श्रीकृष्ण चन्द्र जी ने दिव्य विभूति के रूप में पुण्यमयी भारतभूमि पर जन्म लिया था। जन्माष्टमी का शुभ व पावन पर्व प्रति वर्ष इसी चिरस्मरणीय घटना को याद दिलाने आता है। सम्पूर्ण भारतवर्ष में, और विशेषकर आर्यजन बड़ी श्रद्धा से यह पवित्र पर्व मनाते हैं, तथा हजारों आर्यजन उस परोपकारी आप्त पुरुष और अलौकिक विभूति के गुणगान करके अपने हृदयों को शुद्ध–पवित्र बनाने का संकल्प लेते हैं।

श्रीकृष्ण हमारे देश के उन महापुरुषों की कोटि में आते हैं, जिन्होंने भारत के अंधकारमय वातावरण को दूर कर दिया। श्रीकृष्ण जी धर्मात्मा, धर्मरक्षक, दुष्टनाशक और योगीराज थे। आज भी आर्यपुरुष श्रीकृष्ण जी के प्रति अत्यंत श्रद्धा और सम्मान का भाव रखते हैं। इसका मुख्य कारण है कि महर्षि दयानन्द ने अपनी दूरदर्शिता और स्वाध्याय से श्रीकृष्ण के विषय में पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया, और अन्त में अपने अमूल्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में भिन्न–भिन्न समुल्लासों में उनका वर्णन किया। श्रीकृष्ण के चरित्र के विषय में फैली विभिन्न भ्रान्तियों का निवारण स्वामी जी के द्वारा दिये गये चारित्रिक प्रमाणपत्र से हो जाता है, क्योंकि हीरे की परख या हीरे की कीमत जौहरी ही बता सकता है। महापुरुष को महापुरुष ने, योगीराज को योगीराज ने ही सही अर्थों में पहचाना है। स्वामी जी ने श्रीकृष्ण के विषय में जो कुछ लिखा है, उससे श्रीकृष्ण की वास्तविक स्थिति का पता चल जाता है।

स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में स्पष्ट लिखा है कि श्रीकृष्ण जी आप्त पुरुष थे। अर्थात् श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मृत्युपर्यन्त कोई बुरा काम नहीं किया है। उन्हीं के शब्दों में देखिए– "देखो! श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युक्तक है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है, जिनमें कोई अधर्म का आचरण भी श्रीकृष्ण ने जन्म से मरणपर्यन्त बुरा काम कुछ भी नहीं किया हो, ऐसा नहीं लिखा।"

श्रीकृष्ण जी के विषय में इससे स्पष्ट और गौरवयुक्त बात साधारण मनुष्य नहीं लिख सकते। आप्त पुरुष कौन होते हैं? इसको समझाते हुए लिखा है कि आप्त लोग वे होते हैं, जो धर्मात्मा, कपट–छलादि दोषों से रहित, सब विद्याओं से युक्त महायोगी और सब मुनष्यों के सुखी होने के लिए सत्य का उपदेश करने वाले हैं, जिनमें लेशमात्र भी पक्षपात और मिथ्याचरण नहीं होता।

इसी प्रकार स्वमन्तव्यामन्तव्य में लिखा है कि "जो यथार्थयुक्त धर्मात्मा, सबके सुख के लिए प्रयत्न करता है, उसी को आप्त कहता हूँ।" यदि हम अन्य धर्मावलम्बियों से श्रीकृष्ण जी के विषय में जानना या अध्ययन करना चाहें, तो हमें

श्रीकृष्ण जी के विषय में उनके द्वारा मनघड़न्त अश्लीलता से भरा चित्र देखने को मिलता है, जबकि वे श्रीकृष्ण जी के ठेकेदार बनते हैं, और कहते हैं कि आर्य श्रीकृष्ण और रामचन्द्र जी को नहीं मानते। परन्तु देखा जाय, तो वास्तव में आर्य ही श्रीकृष्ण व राम को अपना आदर्श मानते हैं।

महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि "जो यह भागवत न होता, तो श्रीकृष्ण जी जो एक भद्र पुरुष थे, उनका महाभारत में उत्तम वर्णन दिया है, परन्तु भागवत में उन्हें सब प्रकार के दोष लगाकर दुर्गुणों का बाजार गरम कर रखा है।"

गीता के श्लोक "यदा यदा हि धर्मस्य........" की व्याख्या करते हुए महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है कि धर्मात्मा पुरुष सभी का परोपकार करना चाहते हैं। ये महापुरुष बार–बार जनम लेकर संसार के कल्याण की इच्छा करें, तो इसमें कोई बुराई नहीं, परन्तु ईश्वर स्वयं अवतार नहीं लेता, क्योंकि यह बात वेदविरुद्ध है। सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम् समुल्लास में स्वामी जी ने लिखा है कि "यह बात वेदविरुद्ध होने से प्रमाण नहीं। ऐसा हो सकता है कि श्रीकृष्ण धर्मात्मा और धर्म की रक्षा करना चाहते थे कि मैं युग युग में जन्म लेके श्रेष्ठों की रक्षा और दुष्टों का नाश करूं, तो कुछ दोष नहीं। परोपकाराय सतां विभूतयः अर्थात् परोपकार के लिए सत्पुरुषों का तन–मन–धन होता है।"

स्वामी जी भारतीयों में श्रीकृष्ण जैसा पराक्रम, राजनीति, कूटनीति आदि देखना चाहते थे। परन्तु ऐसा न पाकर स्वामी जी अपनी पुस्तक वेदविरुद्ध मतखण्डन में लिखते हैं कि श्रीकृष्ण जी तो परम पद को प्राप्त हो गये, आप लोग कैसे जीवित बने हो? श्रीकृष्ण जी के सदृश पराक्रम आप लोगों में क्यों नहीं दीख पड़ता? हमने श्रीकृष्ण जी की जय तो बोल दी, परन्तु न उनको समझ सके, और न ही समझने का प्रयत्न किया, तथा न ही उनके उत्तम गुणों को धारण किया। इसीलिए हम उनके जैसे पराक्रम और राजनीति से विहीन हो बैठे।

आज यदि श्रीकृष्ण जी की कूटनीति को समझ पाते, तो भारत की ऐसी दुर्दशा कभी न होती। हमने श्रीकृष्ण जी के चरित्र पर धब्बे कुत्सित कर्म आधारहीन भागवत कथाओं के आधार पर लगाकर, उसे चोर, नचैया, चूड़ी बेचने वाला, और न जाने क्या–क्या बना दिया। क्या हम इस पाप का कोई प्रायश्चित करने को कृतसंकल्प होंगे? यही प्रश्न प्रतिवर्ष श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पूछने के लिए आती है? इसका उत्तर प्रत्येक कृष्णभक्त को अपने में ढूंढना है। किसी महापुरुष के सद्गुणों का लाभ न उठाना किसी जाति के पतन की निशानी है। किंतु उसके सद्गुणों पर कालिमा पोत देना एक अक्षम्य अपराध भी है। वही हिन्दुओं ने किया, और आज तक करते आ रहे हैं। तभी तो आज भी श्रीकृष्ण के प्रति वास्तविक दृष्टिकोण को अभिव्यक्ति देने की आवश्यकता है।

हमने श्रीकृष्ण को, जो वह थे, वह नहीं समझा; जो नहीं थे, वह समझ बैठे; और आज तक बराबर इसी हठ पर डटे हुए हैं। आओ संकल्प लें कि अपने महापुरुषों को सही–सही जानकर उनको मानें, और उनके आदर्शों को जीवन में धारण कर अपना जीवन सफल बनाएं।

–धामपुर मोबा.: 9412855741

आर्यावर्त केसरी

आप ऐसे भी दे सकते हैं हमें सहयोग

१. आर्यावर्त केसरी की वार्षिक सदस्यता रु० १००/–, आजीवन सदस्यता रु० ११००/– अथवा संरक्षक सदस्यता रु० ३१००/– की सात्विक सहयोग राशि भेजकर।
२. अपने परिजनों, इष्ट मित्रों एवं शुभचिन्तकों को वार्षिक या आजीवन सदस्य बनाकर या उन्हें इस दिशा में प्रेरित करके।
३. किसी महानुभाव, संस्था या संगठन के लिए उसकी सदस्यता राशि स्वयं अपनी ओर से भेजकर।
४. किसी विशेष पर्व, उत्सव, उपलब्धि, जन्मदिवस या वैवाहिक वर्षगाँठ आदि पर अपनी शुभकामनाओं का विज्ञापन देकर।
५. अपने प्रतिष्ठान या संस्थान का विज्ञापन देकर।
६. अपने संस्थान, ट्रस्ट या संगठन के स्थापना दिवस, वार्षिक महोत्सव आदि पर केसरी में विशेष परिशिष्ट का प्रकाशन कराकर।
७. अपने आलेख, विचार, प्रतिक्रिया व संगठन के समाचार भेजकर।
८. आर्यावर्त केसरी के प्रतिनिधि बनकर अथवा किसी भी अन्य रूप में, जैसा आप उचित समझें। आर्यावर्त केसरी को अपना अमूल्य सहयोग दे सकते हैं।

कोटिशः धन्यवाद सहित,
–डॉ. अशोक कुमार आर्य, प्रधान सम्पादक

जीवन में सत्य का पालन और पुरूषार्थ करो : सामदेव

रेवाड़ी (सुमन कुमार 'वैदिक')। आर्ष गुरूकुल किशनपुर घासेडा में दीपावली महोत्सव पर यज्ञ एवं श्रीयज्ञ का आयोजन, स्वामी रामदेव के ब्रह्मत्व में 1 से 3 नवम्बर तक हुआ। इस अवसर पर योग गुरू स्वामी रामदेव ने कहा कि वेदों को जानो। दीपावली पर कागज पर छपी लक्ष्मी की पूजा के स्थान पर सत्य की उपासना करो जिसमें सारी सृष्टि है। उन्होंने कहा कि मैं जीवन में जो हूँ ऋषि दयानन्द के कारण ही हूँ। पुरूषार्थी बनों पुरूषार्थ न करने वालों को वेद में दस्यु कहा है। जीवन में समृद्धि का आधार पुरूषार्थ होता है, जिससे संकल्प पूर्ण होते हैं। जीवन प्रारब्ध एवं पुरूषार्थ पर होता है। वेदानुकूल आचरण करने से जीवन महान बनता है। एक हाथ में पुरूषार्थ तो दूसरे में विजय रहेगी। पुरूषार्थी को ही फल मिलते हैं। गुरूकुल का छात्र भूखा नहीं रह सकता, संसार का सारा दर्शन संस्कृत में है। योगमय जीवन के त्याग से कोई स्वस्थ नहीं रह सकता। मैं ऋषि कुल का तथा मेरा गोत्र बृहन है। अपने कुल और गोत्र पर कोई दाग नहीं लगने देना है। स्वामी दयानन्द ने दुनियां को सबसे ऊचाँ चिन्तन दिया जिसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, विश्वनैतिक सभी दृष्टिकोण समाहित हैं।

विज्ञप्ति

भूमि विवादित खाता सं0- 162 रक्बा 1.137 है0 जिसकी चतुरसीमाएं- पूरब- खेत गाटा सं0-164 व 165, पश्चिम- गाटा सं0-161, उत्तर- सरकारी रास्ता, दक्षिण- खेत गाटा सं0-163 ।

स्थित ग्राम धनौरा पर./तह.- धनौरा, जिला-जे.पी.नगर के सम्बन्ध में एक वाद/निगरानी सं0-142 एल.आर. 2011-12 जिला-जे.पी.नगर विनोद बनाम कृपालसिंह मानवीय राजस्व परिषद उ.प्र. लखनऊ में लम्बित है। यदि उक्त भूमि के बाबत कोई भी क्रय-विक्रय किया जाता है तो वह स्वयं जिम्मेदार होगा।

रमाकान्त श्रीवास्तव एडवाकेट
कलेक्ट्री कचेहरी, लखनऊ

आज ही मंगाएं : 'ऋषि अर्पण'

महर्षि दयानन्द के जीवन के दुर्लभ प्रसंगों तथा महत्वपूर्ण फोटो युक्त एक संग्रहणीय पुस्तक

लेखक- अभिमन्यु कुमार खुल्लर
२२, नगर निगम क्वार्टर्स,
जीवाजी गंज, लश्कर,
ग्वालियर-४७४००१ (म.प्र.)
फोन- 0751-2425931,
09303448441

विक्रय मूल्य रुपये १२५/- (डाक व्यय सहित)

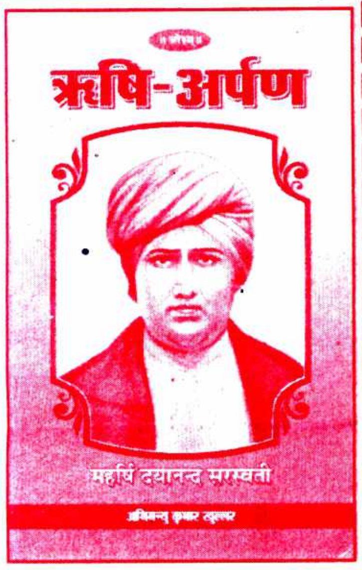

: पुस्तक प्राप्ति स्थल :

1. आर्य प्रकाशन, 814, कुण्डेवालान, अजमेरी गेट, दिल्ली-110006 फोन- 011-23213280, 23233280
2. श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 (फोन-0294-2417294)
3. राष्ट्रीय साहित्य भण्डार, माधव महाविद्यालय के सामने, नई सड़क, लश्कर, ग्वालियर-474001 (म.प्र.) (09425109685)

सत्यार्थ प्रकाश मानक संस्करण की कतिपय विशेषताएं

- धर्मार्य सभा के प्रधान आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र के नेतृत्व में दस विद्वानों की समिति द्वारा तैयार।
- पाठभेद की समस्या का सदैव के लिए निराकरण। मुद्रण भूलों का निराकरण कर परिशिष्ट में आधार की जानकारी भी।
- मानक संस्करण का प्रत्येक पृष्ठ उसी शब्द से प्रारम्भ व समाप्त है जैसा कि मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) में है।
- मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) सदैव के लिए पाठक के समक्ष उपस्थित रहेगा।
- सुन्दर गेटअप '५.६X९.०' पृष्ठ ६५०, वजन ६०० ग्राम, पेपर बैक।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०/- शीघ्र मंगवाएँ

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी।
आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थ प्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे। आज ही अपना आर्डर बुक कराएं और सत्यार्थ प्रकाश पाएं।

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 (राज०)
मोबा.: 09314235101 (कार्यकारी अध्यक्ष), 09829063110 (व्यवस्थापक)

आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि 'आर्यावर्त केसरी' के नाम से भारतीय स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 30404724002 अथवा सिंडीकेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 88222200014649 में सीधे जमा करा सकते हैं, जिसकी सूचना अपने पासपोर्ट साइज़ फोटो, नाम, पते व चलभाष सहित अविलम्ब हमें भेज दें। सहयोग राशि एकाउन्टपेयी चैक या धनादेश द्वारा भी भेजी जा सकती है। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)
दूर.-05922-262033, चल.- 09758833783 / 08273236003

आर्यावर्त केसरी

संरक्षक
श्रीराम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र, यतीन्द्र विद्यालंकार, रवित विश्नोई, डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी, इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जेपी नगर उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033, 9412139333 फैक्स: 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
e-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com